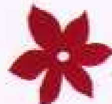


अदिति की नानी बीमार हैं, और एक खास गुलाब है जो शायद उन्हें ठीक कर दे। पर क्या यह 'गहरा गुलाब' सचमुच में है? किसी को पक्का नहीं पता, पर उसकी खोज इन जाँबाज़ साथियों को इंग्लैंड में स्थित डेवन के तट पर ला पहुँचाती है। वहाँ उनकी मुलाकात होती है ग्रेंडल से – एक ऐसा बच्चा जो समुन्दर में रहता है, रात में दूसरों को डराता फिरता है, जिसे कुछ भी याद नहीं रहता और असल में वह इस बात की परवाह भी नहीं करता।

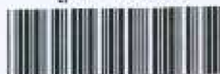
इस अनूठी शृंखला की छठी किताब में, सुनीति नामजोशी हौले से अपने युवा पाठकों के सामने कुछ और गहराई में जाने की चुनौती रखती हैं। अपने खास अन्दाज़ में वह प्राचीन कथाओं के चरित्रों को नई तरह से पेश करती हैं और उनके बारे में प्रचलित धारणाओं पर सवाल उठाती हैं – इस बार बियोवुल्फ की कथा के 'दानव' ग्रेंडल और उसकी माँ के ज़रिए। क्या दानवता देखने वालों की नज़र में होती है? वे चकित-सी पूछती हैं। फिर बन्दरियाजी भी इस बार गुरु गम्भीर मूड में हैं, सो और भी बहुत कुछ है सोचने-विचारने के लिए।

सुनीति नामजोशी की पहली पुस्तक *फेमिनिस्ट फेबल्स* 1981 में प्रकाशित हुई थी। उसके बाद उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें कविता संग्रह भी शामिल हैं। वे डेवन, यू.के. में रहती हैं।

शेफाली जैन चित्रकार हैं जो गुजरात के वडोदरा शहर में रहकर काम करती हैं। वे काफी समय से बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन भी करती रही हैं। इनमें से कुछ हैं: अन्वेषी द्वारा विकसित *मदर* (लेखक: कांचा आइलैया), तूलिका द्वारा प्रकाशित *दस* (हिन्दी-अँग्रेज़ी) जिसका लेखन भी शेफाली ने ही किया है, और यह अदिति शृंखला। एकलव्य की बाल पत्रिका *चकमक* में भी उनका सक्रिय योगदान है।

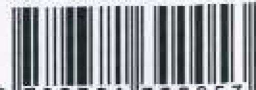


मूल्य: ₹ 50.00



A0164H

ISBN: 978-93-81300-05-3



9 789381 300053





एकलव्य Tulika

[illegible] के वित्तीय सहयोग से विकसित

अदिति और मित्रों की ग्रेंडल से मुलाकात

सुनीति नामजोशी

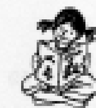
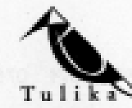
चित्रांकन: शेफाली जैन

अदिति और उसके दोस्तों
की
ग्रेंडल से मुलाकात

सुनीति नामजोशी

अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

चित्रांकनः शेफाली जैन

एकलव्य व तूलिका
का संयुक्त प्रकाशन

अदिति और उसके दोस्तों की ग्रेंडल से मुलाकात

ADITI AUR USKE DOSTON KI GRENDEL SE MULAQAAT

सुनीति नामजोशी
अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा
चित्रांकनः शेफाली जैन

Originally in English as *Aditi and her Friends meet Grendel,* published by Tulika Publishers in 2007.

अगस्त 2011 / 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 80 gsm मेपलिथो व 300 gsm आर्ट कार्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-81300-05-3
मूल्यः ₹ 50.00

एकलव्य व तूलिका का संयुक्त प्रकाशन
सम्पर्क : एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मध्य प्रदेश)
फोनः 0755 - 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल, फोन : 0755 - 246 3769

अंशुमन भोंसले

के लिए



चार जाँबाज़ साथी

अदिति एक साहसी लड़की है जो लड़ाई से नफरत करती है मगर ज़रूरत पड़ने पर साहस की तलवार चला सकती है। अपने तीन जाँबाज़ साथियों, दोनों ड्रैगनों और नाना-नानी से वह दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार करती है।



सुन्दरी उर्फ **सुन्दर हथिनी** उर्फ **सुन्दर हथि** काफी मशक्कत करती है कि वह सिरिल जैसी तार्किक हो सके। गोल्डी की तरह वह बेहद शक्तिशाली और स्नेहिल है।



सिरिल चींटे को नक्शों, लम्बे-लम्बे शब्दों और अपने दोस्तों से प्यार है। कभी-कभी वह सोचता है कि उसे इतना छोटा नहीं होना चाहिए था।



एक आँख वाली बन्दरिया यानी **बन्दरियाजी** अपने साथियों से उम्र में बड़ी है और इसलिए वह बुद्धिमान व समझदार बनने की बहुत कोशिश करती है।

दो ड्रैगन



गोल्डी आग उगलने वाला एक समुद्री ड्रैगन है और **ओपल** खूबसूरत व विनम्र नदी ड्रैगन है। जाँबाज़ साथियों को ये दोनों हर जगह उड़ा ले जाते हैं क्योंकि वे उनके दोस्त हैं। आम तौर पर ये दोनों द्वीप संन्यासिन के साथ एक द्वीप पर रहते हैं।



अन्य पात्र

अदिति के नाना-नानी पश्चिमी भारत की एक छोटी रियासत के शासक हैं। अदिति और उसके दोस्तों को उन्होंने साहस की तलवार, अदृश्य करने वाला एक चोगा और थोड़ी जादुई मिट्टी दी है ताकि इनकी मदद से वे अपनी रक्षा कर सकें। चारों जाँबाज़ साथी उनके साथ रहते हैं।



शिशु शार्क अदिति और उसके दोस्तों से पहली बार तब मिला था जब वे द्वीप संन्यासिन का सन्देशा समुद्री संन्यासिन को पहुँचाने गए थे। शिशु शार्क ओपल का बड़ा भक्त है।



तीनों संन्यासिनें तीन ज्ञानी बहनें हैं। जाँबाज़ साथी इनके लिए कभी-कभी अभियान पर जाते हैं। जाँबाज़ साथी भी उनसे मदद माँगने जा सकते हैं। द्वीप संन्यासिन भारत के पश्चिमी तट से कुछ दूर एक द्वीप पर रहती हैं एवं शेरनियों और उनके शावकों से घिरी रहती हैं। समुद्री संन्यासिन ऑस्ट्रेलिया के तट से कुछ दूर ग्रेट बैरियर रीफ पर रहती हैं, और विज्ञानी संन्यासिन कनाडा में एक झील पर रहती हैं।



ग्रेंडेल और **मदाम ग्रेंडेल** को एक पुरानी कथा के अनुसार दैत्य माना जाता है, मगर बेशक वे दैत्य नहीं हैं। वे इंगलैण्ड के दक्षिण - पश्चिम किनारे से थोड़ी दूर समुद्र में अमन-चैन से रहते हैं।





1

बिलकुल सही गुलाब

बन्दरियाजी एक बड़े बरगद की शाखा पर बैठी मूँगफली खा रही थीं और सिरिल चींटा उनके कन्धे पर बैठा यह सोच रहा था कि वह अगली यात्रा में कहाँ जाना चाहेगा। इतने में सुन्दर हथि सुन्दर हथिनी उनकी ओर भागी आई। वह इतनी हड़बड़ी में थी कि पेड़ से टकराकर उन्हें तकरीबन गिरा ही दिया।

"अरे सुनो, सुनो," सुन्दरी चीखी। "बहुत गड़बड़ है। हमें कुछ करना होगा!"

"आखिर हुआ क्या है?" बन्दरियाजी ने आतुरता से पूछा।

"अदिति!" सुन्दरी बुदबुदाई और कुछ पलों तक आगे कुछ कह नहीं सकी।

सिरिल और बन्दरियाजी फौरन चौकन्ने हो गए।

"अदिति को क्या हुआ?" सिरिल ने पूछा।

"क्या उसे चोट लगी है?" बन्दरियाजी ने जानना चाहा। "कहाँ है वह?"

"उसे, चोट नहीं लगी है," सुन्दरी ने बताया, "और वह गुलाब बाग में है।"

"तो फिर आखिर मामला क्या है?" सिरिल ने सवाल किया।

"वह रो रही है," सुन्दरी ने गम्भीरता से कहा।

"बस इतनी-सी बात है?" बन्दरियाजी ने कहा। उन्हें चैन आया कि कोई बड़ी गड़बड़ नहीं थी।

"बस इतनी-सी बात!" सुन्दरी गुस्से से बोली। "बहुत बड़ी बात है। अदिति कभी नहीं रोती। मैं तो हमेशा रो पड़ती हूँ, पर अदिति नहीं। जब उसे गोल्डी से लड़ना पड़ा था तब भी वह नहीं रोई थी, जब हम तूफान में फँसे थे तब भी वह नहीं रोई, जब हमें ज्वालामुखी दैत्य का सामना करना पड़ा था तब भी वह नहीं रोई। वह कभी नहीं रोती, पर अब रो रही है और मुझे डर लग रहा है।"

एक आँख वाली बन्दरिया बरगद से कूदी और कन्धे पर सिरिल को लिए हुए ही गुलाब बाग की ओर चल दी।

जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि अदिति रोना बन्द कर चुकी थी। वह गुलाब के हरेक पौधे को बड़ी सावधानी से देख रही थी। वह झुकी, उसने एक गुलाब के भीतर बड़े एहतियात से झाँका, ध्यान से सूँघा, ज़रा रुकी और अगले पौधे की ओर बढ़ गई। वह लगातार ऐसा करती गई और इस काम में इतनी मगन थी कि उसके साथियों को उसे रोकने-टोकने में हिचकिचाहट महसूस हुई। आखिरकार गुलाबों की आधा दर्जन झाड़ियाँ जाँचने और क्यारी के अन्त तक पहुँचने के बाद उसकी नज़रें ऊपर उठीं।

"हैलो," उसने कहा, "तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो?"

"यही तो हम तुमसे पूछने आए हैं," सिरिल ने जवाब दिया।

"सुन्दरी ने बताया कि तुम उदास हो," एक आँख वाली बन्दरिया ने आहिस्ता से कहा। "हम यह पूछने आए थे कि मामला क्या है और हम तुम्हारी मदद कैसे कर सकते हैं।"

"मेरी नानीजी," अदिति के चेहरे पर चिन्ता उभर आई थी। "उनकी



तबीयत ठीक नहीं है और मुझे लगता है कि बिलकुल सही गुलाब उनकी तबीयत ठीक कर देगा।"

"तुम्हें कैसे पता?" सिरिल ने जानना चाहा। ऐसा नहीं था कि उसे अदिति पर विश्वास नहीं था। वह सिर्फ तथ्यों को पूरी तरह जान लेना चाहता था।

"क्योंकि एक बार उन्होंने मुझे उस गुलाब के बारे में बताया था," अदिति ने जवाब दिया। "उन्होंने कहा था कि जो भी उसे सूँघता, वह तुरन्त अच्छा महसूस करता था।"

"तो कौन-सा गुलाब सही गुलाब है?" सुन्दरी ने जानना चाहा।

"वही तो मैं जानने की कोशिश कर रही हूँ," अदिति ने जवाब दिया।

"क्या तुम्हारी नानीजी ने उसका वर्णन किया था?" सिरिल ने पूछा।

"हाँ," अदिति ने जवाब दिया। "उन्होंने कहा था कि वह एक बड़ा-सा गहरे गुलाबी रंग का गुलाब था, शायद इंग्लिश टी रोज़, और उसकी सुगन्ध अद्‌भुत थी। उन्होंने बताया कि अपनी युवावस्था में उन्होंने एक बार उसे सूँघा था और उन्हें तुरन्त उमंग और स्फूर्ति का एहसास हुआ था। उन्होंने कहा कि उनके आसपास के सारे रंग पहले से ज़्यादा चटकदार हो गए, परिन्दे ज़्यादा



सुरीली आवाज़ में चहकने लगे और हवा ज़्यादा साफ हो गई।"

"क्या उन्होंने यह भी बताया था कि वह कहाँ मिलेगा और तुम्हें उसे लाने के लिए कहा था?" बन्दरियाजी ने गम्भीरता से पूछा।

"नहीं," अदिति ने जवाब दिया। "गुलाब की कहानी तो उन्होंने मुझे बहुत पहले सुनाई थी।"

"तो फिर तुम्हें कैसे मालूम कि गुलाब से उनकी तबीयत ठीक हो जाएगी?" सिरिल ने जानना चाहा।

"क्योंकि वे सोचेंगी कि वैसा होगा," अदिति ने जवाब दिया।

सुन्दरी की भौंहें तन गईं। "क्या सोचने से वैसा हो जाता है?" उसने पूछा।

"हाँ, कभी-कभी," अदिति का जवाब था।

"अगर मैं सोचूँ कि मैं सुन्दर हथिनी हूँ तो इससे क्या मैं सुन्दर हो जाऊँगी?" सुन्दरी ने पूछा। वह समझना चाहती थी। सिर्फ यह कहना कि सोचने से वैसा हो जाता है, उसे कुछ ज़्यादा ही आसान लग रहा था।

अदिति हँस पड़ी। "हाँ, कभी-कभी," उसने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

सुन्दरी को उसका जवाब दमदार नहीं लगा। "या तो कोई चीज़ वैसी होती है या फिर वैसी नहीं होती, है कि नहीं?" सुन्दरी ने बात आगे बढ़ाई।

"हाँ," सिरिल ने सुन्दरी के साथ हमदर्दी जताते हुए जोड़ा। "कुछ चीज़ें कभी वैसी होती हैं पर कभी वैसी नहीं भी होतीं, यह अजीब-सी बात है, है ना?"

अब तो सुन्दरी और उलझ गई। उसने समझने की यह कोशिश छोड़ दी और जो समझ सकती थी उसकी ओर मुड़ी। "प्लीज़," उसने कहा, "मैं अब तक यही समझी हूँ कि अदिति की नानीजी बीमार हैं और अगर उन्हें गहरा गुलाब सूँघने को मिले तो वे ठीक हो जाएँगी। वह हमें कहाँ मिल सकता है?"



"गहरा गुलाब," बन्दरियाजी ने सोचते हुए दोहराया। "मुझे वह साफ नज़र आ रहा है। वह गहरे गुलाबी रंग का है, पर मेरे देखते-देखते वह गुलाबी रंग गहराता जाता है और इतना गहरा जाता है कि मैं आगे और देख ही नहीं पाती।" वह सुन्दरी को देख मुस्कुराई। "तुमने उस गुलाब को एक नाम दे दिया है," वह बुदबुदाई।

"क्या यह अच्छी बात है?" सुन्दरी ने पूछा। "क्या इससे हमें उसे ढूँढने में आसानी होगी?" वह और ज़्यादा उलझती जा रही थी।

"हाँ, मुझे तो यही लगता है," सिरिल ने निर्णायक रूप से कहा। "अगर किसी चीज़ का नाम हो तो आपको पता चल जाता है कि आप क्या तलाश रहे हैं और आप लोगों से पूछ सकते हैं कि क्या उन्होंने वह चीज़ कहीं देखी है।"

"अगर उस चीज़ या जीव का नाम न हो, तब क्या होता है?" सुन्दरी ने पूछा।

"किसे पता कि तब क्या होता है?" सिरिल ने बेफिक्री से बात उड़ा दी। "आखिरकार, अगर किसी चीज़ या जीव का नाम ही न हो तो हमें कैसे पता चलेगा कि हम किस चीज़ या जीव की बात कर रहे हैं? यह तो ऐसा होगा कि मानो उसका अस्तित्व ही न हो।"

उसका इतना कहना था कि सुन्दरी फफक-फफककर रो पड़ी। "पर जब मेरा नाम नहीं था तब भी मैं थी ना," वह बिलखते हुए बोली।

"पर तुम्हारा नाम तो था। बस कुछ समय के लिए तुम उसे खो बैठी थी, और फिर समुद्री संन्यासिन की मदद से हमने उसे ढूँढ लिया था," बन्दरियाजी ने उसे ढाढस बँधाया।



"हाँ, पर नाम खोने और वापस मिलने के दौरान भी मैं तो थी ना," सुन्दरी ने रूआँसी आवाज़ में विरोध किया।

अदिति ने अपनी बाँह फैलाकर उसे झप्पी दी। "हाँ, बेशक तुम थी, और तुम हमारी दोस्त थी और अब भी हो। और हम सब तुम्हें खूब-खूब प्यार करते हैं। तुमने ही अपनी बुद्धिमानी से गहरे गुलाब को उसका नाम दिया है। सिरिल तो बस इतना कह रहा था कि अगर किसी चीज़ का नाम हो, तो उसे खोजना आसान होता है।"

"पर अगर किसी चीज़ का नाम हो, तो क्या वह होती है?" सुन्दरी ने पूछा। उसे बुद्धिमान कहलाना अच्छा लगा था, पर वह अब भी उलझन में फँसी थी। "और वैसे भी, यह कैसे मालूम पड़ेगा कि यही सही नाम है?"

बन्दरियाजी ने गहरी साँस ली। "यह बात ठीक लग रही है," आखिरकार उन्होंने कहा। "और अगर किसी चीज़ का कोई नाम है तो इसका मतलब यह हुआ कि कम से कम उस चीज़ की कल्पना की गई है और वह हो भी सकती है।"

"मैं अपनी जादुई मिट्टी से ऐसा गुलाब बना सकता हूँ," सिरिल ने सुझाया।

"मैं नानीजी से पूछ सकती हूँ कि उनके मन में जो गुलाब है क्या वह गहरा गुलाब ही है," अदिति ने जोड़ा।

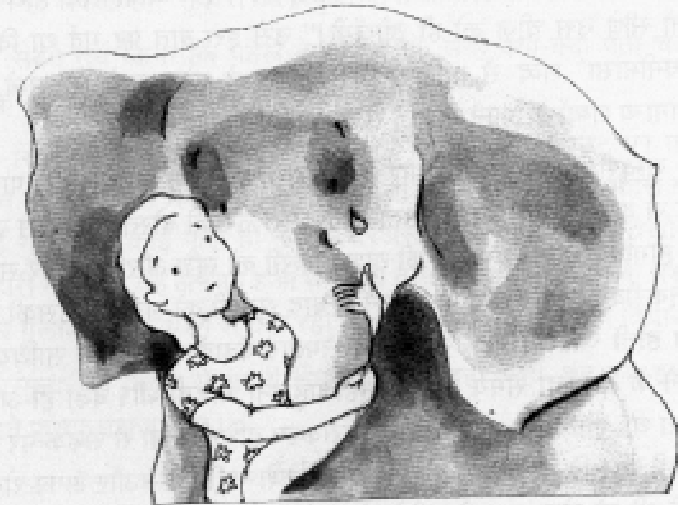
"मैं मन में उसकी कल्पना करने व उसे और ज़्यादा साफ देखने की कोशिश कर सकती हूँ," बन्दरियाजी बुदबुदाई।

सुन्दरी ने कुछ खीजकर उनकी ओर देखा। उसे लगा कि वे सब लोग उससे कहीं ज़्यादा चतुर हैं, पर वे यह देख नहीं पा रहे हैं कि काल्पनिक और असली गुलाब में फर्क स्पष्ट होता है। काश उसके पास आगे बढ़ पाने के लिए कोई ठोस सुराग होता। वह अदिति की ओर मुड़ी। "जब तुम गुलाब की झाड़ियों को जाँच रही थी तो क्या तुम्हें कोई ऐसा गुलाब मिला जो सही गुलाब जैसा हो?"



अदिति ने ना में सिर हिलाया। "नहीं। नहीं, ऐसा मुझे नहीं लगा।"

सब चकरा गए। वे अदिति की नानीजी के लिए गुलाब ढूँढना चाहते थे पर वे यह नहीं जानते थे कि शुरुआत कैसे की जाए। उन्होंने जितनी हो सके उसकी खोजबीन करने और ठीक छह घण्टों बाद सबसे बड़े बरगद तले मिलने का तय किया।



2

वह क्या है?

चारों में सुन्दरी सबसे ज़्यादा उलझन में थी। उस गुलाब का अस्तित्व था भी या नहीं? क्या उसे पहले यह पता करना था कि गुलाब असल में है या नहीं और फिर उसकी तलाश करनी थी? या पहले गुलाब ढूँढना था और उसके मिल जाने पर उसके अस्तित्व की घोषणा करनी थी? "हूँ," वह मन ही मन बुदबुदाई, "मैं 'तत्वमीमांसा' में नहीं उलझूँगी। मैं एक व्यावहारिक हथिनी हूँ। मैं तो सीधे उस चीज़ को ही खोजूँगी।" उसे इस बात पर गर्व था कि वह 'तत्वमीमांसा' शब्द से वाकिफ थी। सिरिल ने एक झटके से लम्बे और असामान्य शब्दों के अपने खज़ाने से यह शब्द निकाला था।

सुन्दरी ने सिर झुकाया और धम्मक-धम्मक सड़क पर चल दी। पास के छोटे से कस्बे में एक अत्तार रहता था जिससे उसकी दोस्ती थी। उसे ज़रूर पता होगा कि कौन से गुलाब की खुशबू किसी को खुश और ठीक कर सकती है। तकरीबन आधा रास्ता पार करने के बाद सुन्दरी को लगा कि उसकी चाल सुस्त होती जा रही है; उसने अपनी रफ्तार बढ़ाई। वह बाकी साथियों से मिलने के तयशुदा समय के बाद नहीं पहुँचना चाहती थी। बड़ा ही अजीब नज़ारा था: एक भारी-भरकम और दृढ़संकल्प हथिनी तेज़ी से सड़क पर भागे जा रही थी। किसी ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की—और अगर रोकना चाहते भी तो रोक न पाते। पीछे से आने वाले इक्का-दुक्का ट्रक भी बड़ी



सावधानी से उसे बचाते हुए आगे निकले। अत्तार को ढूँढने में उसे तकरीबन तीन घण्टे लग गए। जब उसने उसे अपनी बात बताई, तो वह इतनी थकी और फिक्रमन्द लग रही थी कि अत्तार को उस पर दया आ आई। उसने सुन्दरी को एक छोटी शीशी दी।

"वह गुलाब तो मेरे पास नहीं है," उसने कहा, "पर इस शीशी में सबसे बढ़िया इत्र है। शायद यह वही है जिसकी तुम्हें तलाश है।"

सुन्दरी ने उसे शुक्रिया कहा। "हो सकता है कि यह वही हो," उसने खुद से कहा।

उसने खुद को भाप के किसी छोटे इंजन की तरह दौड़ाया। जब वह बरगद तक पहुँची तो बाकी सब साथी वहाँ पहले से मौजूद थे। वह इतनी थकी हुई थी कि एक शब्द भी बोल न पाई। वह धम्म से बैठ गई और इत्र की शीशी ऊपर उठाई ताकि सब लोग देख लें।

"क्या यह गहरे गुलाब का इत्र है?" अदिति ने पूछा।

"हो सकता है," सुन्दरी ने बिल्कुल धीमी आवाज़ में कहा।

सबने तय किया कि पहले वे बता दें कि उन्हें क्या-क्या पता चला है ताकि सुन्दरी को सुस्ताने का समय मिल जाए।

सिरिल ने शुरुआत की। "मैंने पिछले कुछ घण्टे इंटरनेट पर तलाश करने में बिताए और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हो सकता है गहरा गुलाब कोई गुलाब या कोई फूल ही न हो। दरअसल वह एक रंग है। देखो, जब तुम्हारी नानी को वह अनुभव हुआ था तो वे दुनिया को गुलाबी रंग के चश्मे से, गहरे गुलाबी रंग के चश्मे से देख रही थीं। जो भी हो, मेरा तो यही विचार है।"

सुन्दरी ने विरोध में अपनी सूँड़ हिलाई। "नहीं, नहीं, वह एक इत्र है," उसने फुसफुसाकर कहा।

अब बोलने की बारी बन्दरियाजी की थी। "मैंने पिछले कुछ घण्टे सोचने



में बिताए," उन्होंने कहा, "और मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि गहरा गुलाब एक मनःस्थिति है।"

"किसकी स्थिति है?" सुन्दरी ने अविश्वास से पूछा।

"मन की," बन्दरियाजी ने दृढ़ता से दोहराया। "खुली आँखों का सपना, जिसमें गुलाब की पंखुड़ियाँ खुलती हैं और मन और गुलाब एक हो जाते हैं, या मन एक प्रकाश है जिसमें गुलाब साँस लेता है।"

सिरिल और सुन्दरी दोनों ने बन्दरियाजी को सन्देह से देखा। उन्हें अक्सर यह लगता था कि बन्दरियाजी कभी-कभी निरर्थक बातें करती हैं हालाँकि उन्होंने कभी ऐसा कहा नहीं था, क्योंकि वे न तो उन्हें ठेस पहुँचाना चाहते थे और न ही उनका अपमान करना चाहते थे।

अदिति ने कहा, "मैंने नानीमाँ से पूछा था कि क्या गहरे गुलाब की बात सिर्फ एक किस्सा है?" वह रुकी।

"तो वे क्या बोलीं?" बन्दरियाजी ने अधीर होकर पूछा। "क्या वे इतनी बीमार थीं कि जवाब न दे सकें?"

"नहीं, नहीं, वे बेहतर महसूस कर रही हैं। उन्होंने कहा था कि उन्हें पता नहीं है," अदिति ने जवाब दिया।

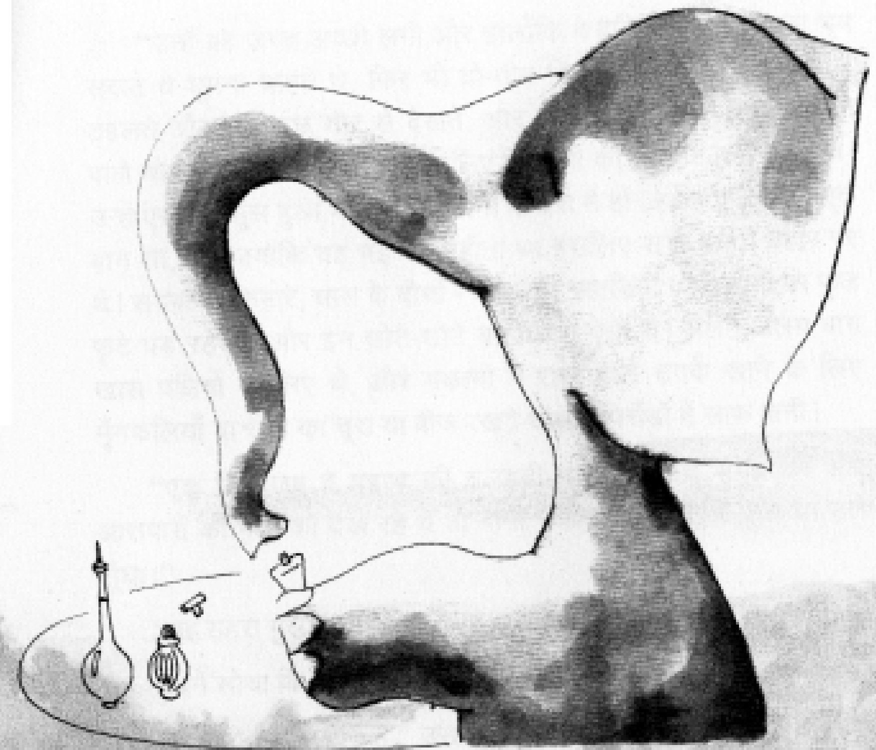
"जब उन्हें उसका अनुभव हो चुका है, तो पता कैसे नहीं है?" सिरिल ने जानना चाहा।

"मैं तो बहुत उलझन में फँसती जा रही हूँ," सुन्दरी ने शिकायत की। "क्या पहले कोई अनुभव की बात बताएगा और फिर किस्से की।"

अदिति हिचकिचाई। "मुझे नहीं पता," वह फुसफुसाई। "अनुभव ही किस्सा है।"

सुन्दरी ने गहरी साँस ली। "ठीक है, प्लीज़ हमें बताओ कि तुम्हारी नानी ने क्या कहा था," उसने अदिति से अनुरोध किया।





"उन्होंने कहा कि एक बार जब वे जवान थीं तब उन्होंने और नानाजी ने सोचा कि वे दुनिया घूमेंगे। जब वे उत्तर के देशों की यात्रा कर रहे थे तो उन्होंने खुद को एक छोटे द्वीप के दक्षिण-पश्चिमी तट पर पाया। लहरदार ग्रामीण इलाका शान्त और सुन्दर था। उन्होंने कहा कि ऐसा लगता था मानो वे एक पन्ने के भीतर हों। वहाँ अक्सर बारिश होती थी और इसलिए सब कुछ हरा था। इस हरी-हरी छटा में सफेद भेड़ें थीं जिनमें से कुछ के चेहरे काले थे और कुछ के सफेद। पहाड़ियों के नीचे जो समुद्र थपकियाँ दे रहा था, कभी तो वह लेसदार किनार वाले मेज़पोश की तरह सपाट पड़ा रहता था और कभी ऊँची, कोलाहल करने वाली लहरों से भर उठता।

"उन्हें वह जगह अच्छी लगी और हालाँकि वे दुनिया भर में जितना घूम सकते थे घूमना चाहते थे, फिर भी दो-तीन दिन वहीं ठहरे। वे इधर-उधर टहलते और सब कुछ गौर से देखते, और क्योंकि वे अक्सर अदृश्य करने वाले चोगे का उपयोग करते थे, इसलिए वे किसी को परेशान नहीं करते थे। उन्हें ऐसा महसूस हुआ मानो वे बागबानों के देश में हों। हरेक कुटिया में एक बाग था, और क्योंकि वह मई का महीना था इसलिए सभी बगीचे बहार पर थे। सड़क के किनारे, घास के बीचों - बीच और पहाड़ियों की ढलानों पर फूल फूटे पड़ रहे थे। और इन छोटे-छोटे बागीचों में पक्षी थे। अलग-अलग बाग खास पक्षियों के लिए थे, और मकानों में रहने वाले उनके खाने के लिए मूँगफलियाँ या रोटी का चूरा या बीज रखते थे और पिरौंडों में साफ पानी।

"एक दिन जब वे पहाड़ की तलहटी पर खड़े नीचे समुद्र को और आसपास की भेड़ों को देख रहे थे तो नानी ने उनके हाथ में जो फूल था उसे सूँघा।"

"वह गहरा गुलाब था, है ना?" सुन्दरी ने बड़े उत्साह से टोका।

सबने सोचा कि अदिति कहेगी, "हाँ, यह वही था", पर वह हिचकिचाई।

"यही तो अजीब बात है," उसने धीरे से कहा। "मेरी नानी को पक्के तौर पर यह भी पता नहीं है कि वह किस तरह का फूल था। पर हाँ, एक तरह से यह सही है कि वह गहरा गुलाब था, क्योंकि उस वक्त हवा बिलकुल साफ हो गई मानो उसे धो दिया गया हो और सारे रंग चमचमाने लगे और परिन्दे ऐसी सुरीली आवाज़ में चहचहाने लगे जैसे पहले कभी न चहके थे।"

"तो तुम्हारे विचार में गहरा गुलाब क्या है?" सिरिल ने अदिति से पूछा। "क्या तुम्हें यह एक कहानी लगती है?"

"मुझे लगता है कि यह एक कविता है," अदिति ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया।

सुन्दरी का सब्र टूट चुका था। "पर क्या उसका अस्तित्व है?" वह लगभग चीख पड़ी।

बन्दरियाजी और अदिति को समझ न आया कि वे क्या कहें।

"चलो पता करते हैं," सिरिल ने निश्चय भरी आवाज़ में कहा।

"तो ठीक है, ऐसा ही करते हैं," सुन्दरी ने बात मान ली।

सूँड़ में इत्र की शीशी मज़बूती से थामे सुन्दरी और बाकी सब साथी अदिति के नाना-नानी से मिलने निकल पड़े।

3

तो कहानियाँ झूठ कहती हैं?

अदिति की नानी के सामने चारों दोस्त एक कतार में खड़े थे। वे एक हत्थेदार कुर्सी पर बैठी थीं और मोगरे की झाड़ियों की ओर देख रही थीं। हालाँकि वे एक छोटे राज्य की रानी थीं, फिर भी सुन्दरी और बाकी लोग उनसे घबराते नहीं थे। वे हमेशा दयालुता व नरमी का व्यवहार करती थीं। सुन्दरी सबसे पहले आगे बढ़ी। उसने सूँड़ में थामी इत्र की शीशी आगे बढ़ाई।

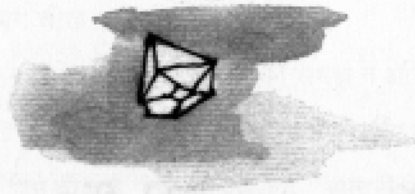
"प्लीज़," उसने कहा, "मुझे लगता है कि गहरे गुलाब का सत शायद एक इत्र हो, और शायद वह इत्र यही हो, सो मैं इसे लेती आई हूँ ताकि आप बेहतर महसूस करें।"

अदिति की नानी ने इत्र लिया और मुस्कुराईं, "प्यारी सुन्दर हथि, गहरे गुलाब का सत लाने के लिए शुक्रिया, और मैं अभी से बेहतर महसूस करने लगी हूँ।"

सुन्दरी पीछे हट गई। वह खुश थी क्योंकि अदिति की नानी वाकई पहले से बेहतर दिख रही थीं।

अब सिरिल आगे आया। "द्वीप संन्यासिन से पूछकर मैं एक काल-रत्न लाया हूँ," उसने कहा। "बात यह है कि मेरे खयाल से गहरा गुलाब शायद एक रंग है।" इतना कह उसने काल-रत्न आगे बढ़ाया। यह रत्न एक बड़े





माणिक जैसा दिखता था, पर ज़्यादा चमकदार और साथ ही ज़्यादा गाढ़े रंग का था। रानी ने उसे उठाया और उसमें गहराई तक देखा।

"शुक्रिया सिरिल। यह सच में सुन्दर है। जब मैं इसे देखती हूँ तो इसका रंग गहरा होता जाता है।"

"ध्यान रखिएगा कि यह टूट न जाए," सिरिल ने उन्हें आगाह किया।

अब एक आँख वाली बन्दरिया आगे आई। "मुझे लगा कि गहरा गुलाब एक मनःस्थिति है," उसने कहा। "सो मैं आपके लिए अपना प्यार लाई हूँ। अगर आप चाहें तो मैं आपके पास रहकर आपकी देखभाल करूँगी।"

अदिति की नानी हँसीं और एक आँख वाली बन्दरिया को गले लगा लिया। "प्यारी बन्दरियाजी," वे बोलीं, "मुझे आपका प्यार महसूस होता है और वह मुझे खुश और चंगा रखता है।"

अब अदिति की बारी थी। वह अपनी नानी को बहुत प्यार करती थी और उनके लिए कुछ भी कर सकती थी, पर इस समय वह हिचकिचाई। उसे समझ नहीं आया कि वह क्या कहे।

"मैंने... मैंने सोचा कि गहरा गुलाब एक कहानी है," उसने झिझकते हुए बात शुरू की।

"या एक अनुभव," अदिति को मुश्किल में पड़ा देखकर सुन्दरी ने जोड़ा।

"या एक अनुभव जो एक कहानी है," अदिति ने बात जारी रखी। "पर मैं उसे ठीक से समझ नहीं पाई, सो उसे आपके लिए फिर से गढ़ नहीं सकती।

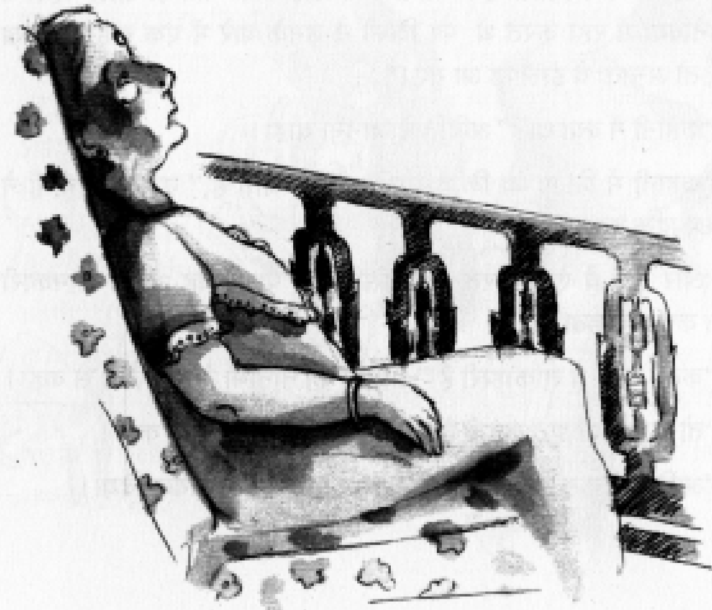


क्या हम सब उसी हरे और मोहक द्वीप पर जाएँ ताकि किसी तरह वह अनुभव आपके लिए वापस ला सकें?"

अदिति की नानी मुस्कुराईं और उन्होंने उसे अपने पास खींच लिया। "यह तो बड़ा अच्छा होगा, मेरी नन्ही। पर समय वापस नहीं आता और न उसे कैद किया जा सकता है, सचमुच में नहीं और देर तक नहीं। फिर भी मैं चाहूँगी कि तुम लोग उस द्वीप पर जाओ, अगर तुम और बाकी सब जाना चाहो तो...."

"ओह हाँ!" बाकी सब चीख पड़े।

"और क्या पता, आखिरकार, हमें गहरे गुलाब का मतलब भी समझ आ जाए," सिरिल ने जोड़ा।





"हो सकता है," अदिति की नानी मुस्कुराकर बोलीं। उस द्वीप पर लन्दन शहर भी है जहाँ तुम पहले जा चुके हो। पर इस बार मैं चाहूँगी कि तुम द्वीप के दक्षिण-पश्चिम तट पर, डेवन के इलाके में जाओ। और मेरी सखी मदाम ग के लिए कुछ फूल लेते जाना और उनका हालचाल भी पूछना।"

"इस 'ग' का क्या मतलब है?" सुन्दरी ने पूछा।

रानी हिचकीं। "उन्हें अपना पूरा नाम इस्तेमाल करना अच्छा नहीं लगता। लोग उससे डरते हैं।"

इस बात से सबके मन में कौतूहल जागा। "क्या वे अकेले रहती हैं?" सिरिल ने सवाल किया।

"नहीं, वे अपने बेटे के साथ इंग्लिश चैनल में, समुद्र के अन्दर, पूर्वी डेवन के तट के पास रहती हैं।"

"और उसका नाम क्या है?" एक आँख वाली बन्दरिया ने पूछा।

"वह भी ग कहलाता है?" रानी फिर झिझकीं। "सैकड़ों साल पहले वे स्कैंडिनेविया में रहा करते थे, पर किसी ने उनके बारे में एक कहानी लिख डाली, तो अन्ततः वे इंग्लैण्ड आ गए।"

"कहानी में क्या था?" अदिति ने जानना चाहा।

"कहानी में लिखा था कि वे लोगों को खा जाते हैं," उसकी नानीमाँ ने अनिच्छापूर्वक बताया।

"और क्या वे ऐसा करते थे?" सिरिल ने पूछा। वह अपनी जानकारी दुरुस्त करना चाहता था।

"कतई नहीं! वे शाकाहारी हैं!" अदिति की नानीमाँ ने नाराज़गी से कहा।

"तो कहानियाँ झूठ कहती हैं," अदिति ने अपनी नानी से कहा।

"आखिर वे कहानियाँ ही तो हैं," उसकी नानीमाँ ने जवाब दिया।



"अगर वे सिर्फ झूठ कहती हैं तो फिर उन्हें सुना ही क्यों जाए?" अदिति ने जानना चाहा।

"क्योंकि वे मज़ेदार भी हो सकती हैं," उसकी नानी ने नरमी से कहा। "और क्योंकि वे हमें चीज़ों को अलग तरह से देखने या अलग तरह से महसुस करने या जो पहले समझ आया न हो उसका अर्थ समझने में मदद करती हैं।"

"क्या सबको एक-सी बात समझ आती है?" सुन्दरी ने जानना चाहा।





"ना, हमेशा नहीं। यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहानी के पास क्या लेकर आते हैं," रानी ने प्यार से जवाब दिया।

सिरिल उलझन में पड़ गया। उसने तय किया कि वह एक सीधा और साफ सवाल पूछेगा जिसका जवाब भी साफ हो। "प्लीज़," उसने कहा, "आपने उस कहानी का क्या मतलब समझा था— वह कहानी जो मदाम ग और उनके बेटे द्वारा लोगों को खा जाने के बारे में थी?"

"मुझे लगता है," अदिति की नानीमाँ ने जवाब दिया, "कि उसका मतलब यह था कि जो लोग उनके आसपास रहते थे, वे उनसे और उनके बेटे से इसलिए डरते थे क्योंकि वे दोनों उनके जैसे नहीं थे।"

"आपने ऐसा क्यों नहीं माना कि वे सच में लोगों को खा जाते हैं?" सिरिल ने सवाल किया।

"शायद इसलिए क्योंकि मैं उनसे मिली थी। अदिति के नानाजी और मैं अदृश्य करने वाला चोगा ओढ़कर एक चट्टान पर बैठे थे। हम लहरों और पथरीले तट पर खेलते बच्चों को देख रहे थे। कुछ साहसी बच्चे पानी में उतर चुके थे। मई के महीने में भी वहाँ का पानी काफी ठण्डा होता है। हम यों ही इधर-उधर देख रहे थे कि हमने मदाम ग और उनके बेटे नन्हे ग को अदृश्य करने वाला चोगा पहने पास की एक चट्टान पर बैठे देखा। हम एक-दूसरे को तो नज़र आ रहे थे, पर तट पर मौजूद लोगों को दिखाई नहीं दे रहे थे। हम बातचीत करने लगे। तुम्हारे नानाजी और नन्हे ग की खासी दोस्ती हो गई। वे समुद्र किनारे दूर-दूर तक घूमने जाते और चट्टानों के नीचे बनी तलैयाओं को देखते-परखते और ग्रेन... मेरा मतलब है ग उन्हें समुद्री जीवन की बातें बताता, और तुम्हारे नानाजी उसको अपने बचपन के साहसिक कारनामों की बातें बताते। वह अच्छा समय था।"

सुन्दरी बड़े ध्यान से सुन रही थी। "तो आपका अनुभव कहानी से अलग था। क्या इसका यह मतलब है कि कहानी और अनुभव बिलकुल अलग-अलग होते हैं?" सुन्दरी ने पूछा।



"वे आपस में जुड़े हुए होते हैं," रानी ने जवाब दिया। "कई बार लोग अपने अनुभव का मतलब समझने के लिए कहानियाँ गढ़ते हैं।"

सुन्दरी ने सिर हिलाया। उसने तय किया कि वह किसी ठोस चीज़ पर ध्यान केन्द्रित करेगी। "जो भी हो, क्या आप चाहती हैं कि हम मदाम ग के पास जाएँ और उनके लिए कुछ फूल लेते जाएँ?" उसने कहा।

"हाँ, प्लीज़," अदिति की नानीजी ने जवाब दिया, "अगर गोल्डी और ओपल तुम्हें ले जाने को तैयार हों और अगर तुम जाना चाहो तो।"

"ओह! मैं तो ज़रूर जाना चाहूँगा," सिरिल ने ज़ोर से कहा। "कितनी अच्छी जगह लगती है, बागों और बागबानों का यह देश।"

"और मैं नन्हे ग से मिलना चाहूँगी। हम साथ मिलकर दूर-दूर तक सैर पर जा सकते हैं," सुन्दरी ने कहा।

"और मुझे तो खास तौर से मदाम ग से मिलना है," बन्दरियाजी ने जोड़ा।

"और मैं दोनों से मिलना चाहती हूँ और आपकी ओर से उनके लिए फूल ले जाना चाहती हूँ," अदिति ने अपनी नानीमाँ को कहा और उन्हें गले लगा लिया।

वे झटपट तैयार हो गए। सिरिल ने ओपल और गोल्डी को एस.एम.एस. भेजा और दोनों ड्रैगन घण्टे भर में आ पहुँचे। वे दोनों एक और यात्रा की बात से बेहद खुश थे, फिर चाहे यह यात्रा सिर्फ कुछ फूल पहुँचाने के लिए ही क्यों न हो। सिरिल ने नक्शा देखा और रानी की मदद से वह जगह ठीक-ठीक पहचान ली जहाँ उन्हें उतरना था।

"आप हमारे साथ क्यों नहीं चलतीं?" अदिति ने अपनी नानीमाँ से पूछा।

"काश, मैं चल सकती," रानी ने जवाब दिया। "इस बार मैं नहीं जा सकती। पर किसी दिन ज़रूर जाऊँगी। इस बीच तुम सब मेरे दूत हो।"

सिरिल ने नए शब्द पर गौर किया और अपने शब्द भण्डार में जोड़ लिया। "आपके खयाल से उन्हें कौन से फूल सबसे ज़्यादा पसन्द आएँगे?" उसने पूछा।

मोगरे के फूलों की बात तय हुई और जब अदिति और बन्दरियाजी उन्हें तोड़कर ताज़ा रखने के लिए केले के पत्ते में लपेट रही थीं, सुन्दरी ने गोल्डी की पीठ पर अपना हौदा रखने और रास्ते के लिए ज़रूरत का सामान बाँधने में मदद की।

नानीमाँ के कहने के दो घण्टों के अन्दर अदिति और उसके साथी डेवन के पूर्वी तट के लिए निकल पड़े।

4

अनिद्रा

उनकी उड़ान के दौरान कुछ खास नहीं घटा। गोल्डी और ओपल दोनों रास्ता जानते थे। आधा रास्ता तय करने के बाद एक एकान्त तट पर वे सब रात भर सुस्ताए और अगली शाम तक उन्होंने यात्रा पूरी कर ली। सिरिल ने वह छोटी खाड़ी पहले से पहचान रखी थी जहाँ उन्हें उतरना था, और उन्हें वह चट्टान और गुफा भी बड़ी आसानी से मिल गईं जिनके बारे में अदिति की नानीमाँ ने बताया था। उन्होंने अपने आराम का बन्दोबस्त शुरू किया। पहले गोल्डी और ओपल ने सोचा कि वे थकान मिटाने के लिए समुद्र में नहा लेंगे, पर वहाँ पानी बहुत ठण्डा था। सबके साथ गुफा में घुसने के लिए उन्होंने अपने शरीर पर थोड़ा-थोड़ा 'छोटा करो' लेप मला जो द्वीप संन्यासिन ने गोल्डी को एक पिछली साहसिक यात्रा के समय दिया था।



अदिति ने टॉर्च जलाई। गुफा काफी बड़ी और साफ थी। लगता था मानो किसी ने उसे झाड़ा-बुहारा हो। शायद वह मदाम ग की गुफा थी? पर वहाँ कोई था नहीं और वे लोग बेहद थके हुए थे। उन्होंने छोटी-सी आग जलाई और आराम का जुगाड़ कर सो गए। मदाम ग और उनके बेटे की तलाश वे सुबह करेंगे।

पथरीले तट पर लहरें छपछपा रही थीं पर वे गुफा तक नहीं आ रही थीं। जाँबाज़ साथी ठण्ड और पानी से बचे रहे। गोल्डी और ओपल हल्के खर्राटे भर रहे थे। शान्त समुद्र पर आधा चाँद चमक रहा था। सब कुछ शान्तिपूर्ण था। इसलिए जब सुन्दरी ने पाया कि एक हरा-सा लड़का उसको ताक रहा है तो उसने सोचा कि वह सपना देख रही है।

"तुम कौन हो?" उसने पूछा।

लड़का झिझका। फिर दृढ़ स्वर में बोला, "मैं एक दानव हूँ।"

सुन्दरी के लिए ऐसा होना अजीब बात थी। "क्यों?" उसने पूछा।

"बस मैं हूँ," उसने जवाब दिया। "सब लोग जानते हैं कि मैं ग्रेंडल दानव हूँ। मैं उनके सपनों में घूमता हूँ और रात को उन्हें डराता हूँ।"

"इसके अलावा," उसने शान बघारते हुए कहा, "मैं लोगों को खाता हूँ।"

सुन्दरी हँसी न रोक पाई। "क्या सच में?" उसने पूछा।

लड़के ने सिर झुका लिया। "दरअसल नहीं," उसने कहा। फिर वह खिल उठा। "पर यह सुनने में अच्छा लगता है। और इससे लोग प्रभावित होते हैं। मैंने सोचा था कि तुम इससे डर जाओगी।"

"तुम मुझे डराना क्यों चाहते थे?" सुन्दरी ने विरोध करते हुए कहा। "मैं तो अमन-पसन्द हथिनी हूँ, चुपचाप सो रही हूँ। मुझे डराने का क्या मतलब?"

"तुम सचमुच डर जाओगी ऐसा मैंने नहीं सोचा था," ग्रेंडल बुदबुदाया। "तुम बहुत बड़ी हो।"

"हथिनियाँ बड़ी ही होती हैं," सुन्दरी ने जवाब दिया।



"मैंने तो हथिनियाँ देखी नहीं। तुम्हारा आकार अजीब है। क्या तुम भी दानव हो?" ग्रेंडल ने पूछा।

"बिलकुल नहीं! मैं सुन्दर हथिनी सुन्दर हथि हूँ।"

ग्रेंडल ने बात को पकड़ लिया। "अगर तुम सुन्दर हथि हो सकती हो तो मैं शानदार ग्रेंडल क्यों नहीं हो सकता?"

सुन्दरी ने कुछ देर सोचा। "अगर तुम चाहो तो हो सकते हो। क्या तुम शानदार कहलाना पसन्द करोगे, या छोटे में शानू?"

"मुझे लगता है कि मुझे ग्रेंडल कहलाना ही अच्छा लगेगा।"

"ग्रेंडल दानव?" सुन्दरी ने छेड़ा।

"नहीं, सिर्फ ग्रेंडल। जो भी हो, तुम हमारी गुफा में कर क्या रही हो?"

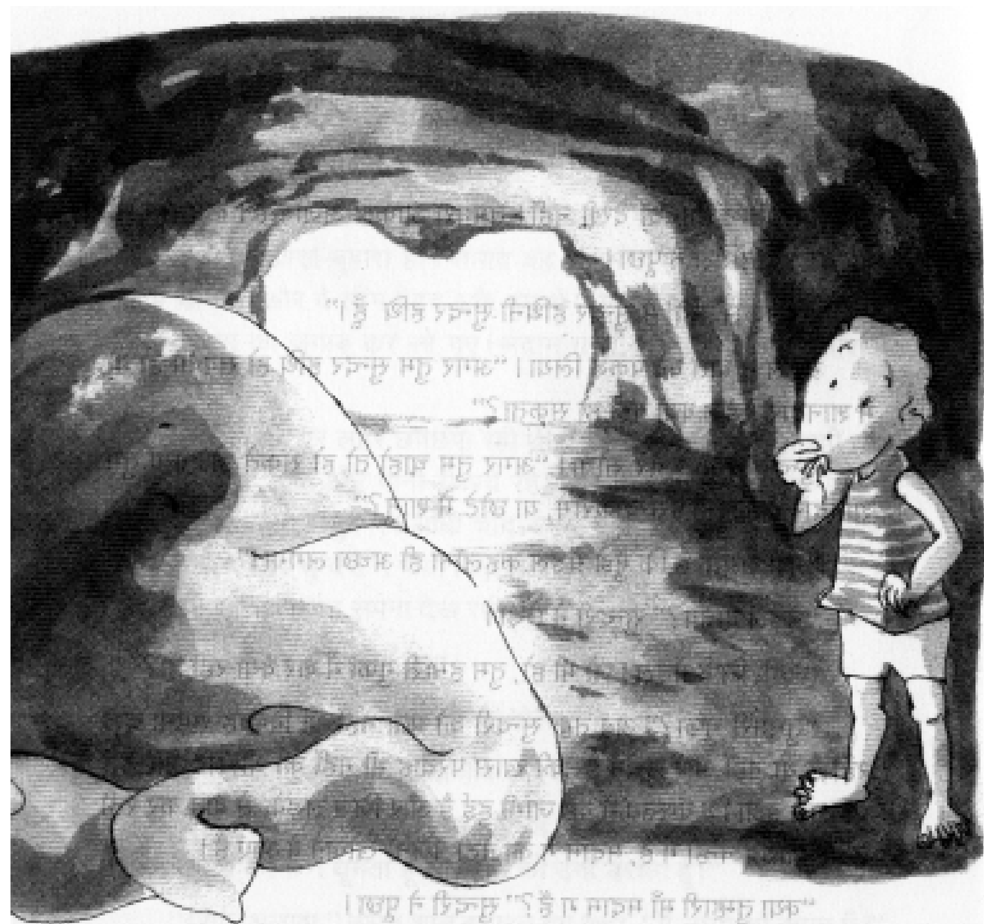
"तुम्हारी गुफा?" अब तक सुन्दरी को पता नहीं था कि वह सपना देख रही है या नहीं और उसने इसकी खास परवाह भी नहीं की थी; पर अब उसे एहसास हुआ कि वास्तव में वह जागी हुई है और जिस लड़के से बात कर रही है वह शायद नन्हा ग है, मदाम ग का बेटा, जिन्हें खोजने वे आए हैं।

"क्या तुम्हारी माँ मदाम ग हैं?" सुन्दरी ने पूछा।

"वे मदाम ग्रेंडल कहलाती हैं," ग्रेंडल ने जवाब दिया। "तुम यह क्यों पूछ रही हो?"

"क्योंकि हम उनसे मिलने आए हैं," सुन्दरी ने उसे बताया। "पर वह तो सुबह भी हो सकता है। तुम्हें क्या इस वक्त बिस्तर में नहीं होना चाहिए? तुम बहुत छोटे हो, रात को इधर-उधर घूमने की तुम्हारी उम्र नहीं है।"

"मैं इतना छोटा नहीं हूँ," ग्रेंडल ने जवाब दिया। "मैं सैकड़ों साल का हूँ। और मेरी माँ, वह तो शायद हज़ारों साल की होंगी। बात बस इतनी है कि हम बहुत धीमी रफ्तार से बढ़ते हैं। और वैसे भी, पिछले पचास सालों से तो मैं बिलकुल भी बड़ा नहीं हुआ हूँ।"



इससे पहले कि सुन्दरी उससे पूछती कि उसका क्या मतलब है, ग्रेंडल कहता गया, "मेरी माँ से न कहना कि मैं मटरगश्ती कर रहा था। उन्हें यह पसन्द नहीं। दरअसल बात यह है कि मुझे अनिद्रा की बीमारी है।"

"अनिद्रा!" सुन्दरी चिल्ला उठी। "सिरिल को यह शब्द अच्छा लगेगा। इसका मतलब क्या होता है?"

"इसका मतलब होता है सो न पाना। ये सिरिल कौन है?"

"सिरिल चींटा है। तुम उससे और बाकी सब से सुबह मिलोगे। तो जब तुम सो नहीं पाते तब क्या करते हो?"

"मैं इधर-उधर घूमता हूँ और लोगों के सपनों में घुस जाता हूँ और उन्हें बेहद डरा देता हूँ!"

"यह तो बड़ा शरारती काम है," सुन्दरी ने उससे कहा। "तुम ऐसा क्यों करते हो?"

"क्योंकि मैं कर सकता हूँ," ग्रेंडल बोला। "फिर, करने के लिए यह कुछ तो है। वैसे भी, मैं तुम्हें डरा नहीं पाया। मुझे नहीं लगता कि मैं तुम्हें डरा पाता। बल्कि तुमने मुझे डरा दिया था!"

सुन्दरी को बहुत गुस्सा आया। "मैंने अपनी ज़िन्दगी में किसी को नहीं डराया!"

"तुम्हें कैसे पता कि दूसरों पर तुम्हारा क्या असर पड़ता है? मेरा खयाल है, जिसने पहले कभी हथिनी न देखी हो वह सड़क पर तुम्हें आता देखे तो बिलकुल डर जाएगा। मेरे खयाल से यह मेरी बहादुरी है कि मैं तुम्हारे पास चला आया और तुम्हें देखने लगा," ग्रेंडल ने पलटकर जवाब दिया।

सुन्दरी इससे इतना चौंक गई कि उससे कुछ कहते नहीं बना। उसने अपना गला खँखारा। "लड़के," उसने कहा, "मुझे लगता है कि अब तुम्हें सो जाना चाहिए।"

"ठीक है," ग्रेंडल ने कहा, "पर मेरी माँ को यह न बताना कि मैं मटरगश्ती कर रहा था।"

"ठीक है, नहीं बताऊँगी," सुन्दरी ने वादा किया और सिर घुमाकर सो गई। उसने सपने में देखा कि ग्रेंडल एक हरे फूल में बदल गया है जो अपनी पंखुड़ियाँ खोलता और बन्द करता रहता है और रातों को कभी घूमता नहीं।

अगली सुबह जब सब जाग गए तो सुन्दरी ने उन्हें नन्हे ग्रेंडल की बात बताई।

"पर ग्रेंडल और उसकी माँ तो दानव हैं!" अदिति ने ऊँचे स्वर में कहा। "मैंने उनके बारे में पढ़ा है।"



"हाँ," सिरिल ने भी माना, "इसीलिए तुम्हारी नानी हमें उनका नाम नहीं बता रही थीं।"

"खैर, मुझे इस बात की परवाह नहीं कि वे दानव हैं। अगर वे मेरी नानीमाँ के दोस्त हैं तो वे मेरे भी दोस्त हैं," अदिति ने फैसला किया।

"वे दानव नहीं हैं!" सुन्दरी ने विरोध किया। "ग्रेंडल शानदार है! उसकी दो-एक समस्याएँ हैं, पर वह ठीक है। और जहाँ तक मदाम ग्रेंडल का सवाल है, मुझे पक्का यकीन है कि वे भी भली होंगी। बस वे दिखते कुछ अलग हैं। आखिर जिसने पहले कभी हथिनी न देखी हो वह मुझे भी दानव मान सकता है।"

वे सब सुन्दरी को घूरने लगे। वे उसके इस भावातिरेक से चौंक गए थे। "दानवता तो देखने वाले की नज़र में होती है," बन्दरियाजी बुदबुदाई।

वह यह कह ही रही थी कि मदाम ग्रेंडल और उनका बेटा आ पहुँचे। वे गुफा के द्वार पर खड़े होकर चारों जाँबाज़ों और दोनों ड्रैगनों को घूर रहे थे।

5

मदाम ग

अदिति और बन्दरियाजी हड़बड़ाकर उठ खड़े हुए और माफी माँगने आगे बढ़े। उन्हें पता था कि वे बिना इजाज़त लिए उस गुफा में सोए थे, जो शायद मदाम ग की थी। पर मदाम ग नाराज़ नहीं लग रही थीं, हाँ उनके चेहरे पर कुछ उलझन ज़रूर झलक रही थी।

मदाम ग बेहद लम्बी थीं। उनकी आँखें और बाल रुपहले थे, और उनका रंग इस वक्त ताँबई था पर लगता था कि वह बदल सकता है। उन्होंने जो कपड़े पहने थे, वे पानी के बने हुए मालूम होते थे और वे बह रहे थे और लगातार रंग बदल रहे थे। अदिति उनसे डरती थी, पर उसने जल्दी से बताया कि उसकी नानीमाँ ने उनके लिए फूल भिजवाए हैं। इस पर मदाम ग का चेहरा एक ऐसी अद्‌भुत मुस्कान से रोशन हो गया जो जाँबाज़ों ने पहले कभी नहीं देखी थीः उनके बाल लहरों की तरह बहने लगे, उनके कपड़े घूमने, मचलने लगे, और उनकी आँखें प्रकाश से भरकर दमकने लगीं। उन्होंने अदिति को गले लगाया और बाकी सबका गर्मजोशी से स्वागत किया।

मदाम ग ने पूछा, "तुम कल रात को क्यों नहीं मिले?"

बन्दरियाजी ने समझाया कि वे रात को बहुत देर से पहुँचे थे। सबका परिचय हुआ और जब यह सब चल रहा था तो सुन्दरी ने ग्रेंडल की ओर देखकर दोस्ताना अन्दाज़ में अपनी सूँड़ हिलाई, पर उसने सुन्दरी को ऐसे



देखा मानो पहले कभी न देखा हो। सुन्दरी को हैरानी हुई; उसने सोचा कि वह ऐसा शायद इसलिए जता रहा है ताकि उसकी माँ को पता न चले कि वह रात को मटरगश्ती कर रहा था। वैसे वह काफी दोस्ताना नज़र आ रहा था।

"क्या यह गुफा ठीक है?" मदाम ग ने पूछा। "क्या हम तुम्हारे आराम के लिए कुछ और व्यवस्था करें? कम से कम कुछ सूखी समुद्री घास ला दें ताकि तुम्हारे बिस्तर और मुलायम हो जाएँ?"

अदिति ने कहा कि वे सचमुच आराम से हैं, और उसने जानना चाहा कि कहीं उन्होंने मदाम ग की गुफा तो नहीं हथिया ली है; पर मदाम ग ने बताया कि उनकी और ग्रेंडल की कई गुफाएँ हैं और इस गुफा का तो उन्होंने शायद ही कभी इस्तेमाल किया हो। उन्होंने ग्रेंडल को थोड़ी घास और कुछ खाने-पीने का सामान लाने भेजा। ओपल और गोल्डी भी उसके साथ गए।





अदिति, बन्दरियाजी, सिरिल और सुन्दरी गुफा के बाहर चट्टानों पर बैठ गए और लहरों के ऊपर उड़ती चिल्लियों और ज्वार से बढ़ आते पानी को देखते रहे।

"अब अपने नाना-नानी के बारे में बताओ," मदाम ग ने कहा। "वे कैसे हैं?"

"वे ठीक हैं," अदिति ने कहा। "मेरी नानी की तबीयत कुछ समय पहले गड़बड़ थी और हम उन्हें अच्छा करने के लिए गहरा गुलाब तलाश रहे थे; पर वे वैसे ही ठीक हो गईं।"

"आहा!" मदाम ग ने कहा। "तो तुम गहरे गुलाब के बारे में जानती हो?"

"आपका मतलब है आप भी उसके बारे में जानती हैं," सुन्दरी बोल पड़ी। "मुझे तो पक्का पता ही नहीं था कि वह दरअसल होता भी है। मैंने सोचा कि वह महज़ एक नाम था जिसे मैंने यों ही गढ़ लिया।"

मदाम ग जवाब देने जा रही थीं कि ग्रेंडल ओपल और गोल्डी के साथ लौट आया। वे समुद्री घास के कई बड़े-बड़े गट्ठर उठाए हुए थे।

उन्होंने गट्ठर उतारे और बिस्तर बनाने लगे। ग्रेंडल सुन्दरी के साथ मिलकर एक बड़ा-सा बिछौना बना रहा था। सुन्दरी ने उससे कहा, "तुम्हारी माँ जानती हैं कि गहरा गुलाब क्या होता है। मैंने तो सोचा था कि वह या तो कोई इत्र है या फिर एक नाम जो मैंने गढ़ लिया था।"

ग्रेंडल को आश्चर्य हुआ। "यह तो मैं भी जानता हूँ कि गहरा गुलाब क्या है," उसने सुन्दरी से कहा।

"ओह, बताओ वह क्या है? वह क्या है?" सुन्दरी ने बहुत जोश में आकर कहा।

बाकी लोग भी काम रोक जवाब का इन्तज़ार करने लगे। ग्रेंडल ने अपने कन्धे उचकाए। "अरे वह तो मेरा पसन्दीदा मुरब्बा है। मैं उसे नाश्ते में खाता



हूँ। वह गुलाब की पत्तियों और उसके निचले हिस्से को मिलाकर बनाया जाता है। और उसका स्वाद मज़ेदार है।"

सुन्दरी को परेशानी हुई। "तुम्हारा मतलब है कि वह बस एक तरह का मुरब्बा है?" उसने हिचकिचाते हुए पूछा।

मदाम ग और दूसरों ने उनकी बातचीत सुन ली थी। मदाम ग हँसीं। "नहीं, नहीं, वह मुरब्बा नहीं है। अपने पसन्दीदा मुरब्बे को उसने यह नाम दे दिया है।"

"तो वह स्वाद है या खुशबू?" सुन्दरी ने पूछा।

मदाम ग ने कुछ सोचा। "कोई स्वाद या सुगन्ध उसे शुरू कर सकते हैं," उन्होंने कहा।

"क्या वह एक अनुभव है?" अदिति ने पूछा।

"या मनःस्थिति?" बन्दरियाजी ने जोड़ा।

ये सब मदाम ग के पास घिर आए थे।

मदाम ग की भौहें सिकुड़ीं। उन्होंने धीरे-धीरे कहा, "वह समय का एक ऐसा पल है जहाँ समय थम जाता है। नहीं, यह बात पूरी तरह सही नहीं है। आप थमे रहते हैं और समय चलता रहता है। आप पैरों तले घूमती हुई धरती और आकाश में चक्कर काटते ग्रहों को महसूस कर सकते हैं; पर आप खुद बिलकुल स्थिर होते हैं और समय में से गुज़रती हरेक चीज़ की साँस और टिकटिक सुन सकते हैं।"

"यह तो अद्भुत है," सिरिल बोला। "क्या आपने इसे अनुभव किया है?"

"सिर्फ एक बार," मदाम ग ने जवाब दिया। उनकी आवाज़ में उदासी थी।

"क्या आप इस बात से उदास हैं कि ऐसा सिर्फ एक बार हुआ?" सुन्दरी ने उनसे पूछा।



"नहीं," मदाम ग झिझकीं और समुद्र की ओर देखने लगीं। "पर मैं बहुत लालची थी। मैं चाहती थी कि ग्रेंडल को भी यह अनुभव हो। मैंने कई ज्ञानी स्त्री-पुरुषों की सलाह ली। उन सबने कहा कि यह ऐसे नहीं होता। यह तो संयोग की बात है। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं जिसको आप ढूंढ सकें या किसी को दे सकें।"

"तो आपने क्या किया?" अदिति ने कोमलता से पूछा।

वे अब गुफा से बाहर निकलकर चट्टानों पर बैठ चुके थे। मदाम ग का जवाब इतनी धीमी आवाज़ में था कि उसे सुनना कठिन था। "मैं फिर ज्ञानी स्त्री-पुरुषों के पास गई। उन्होंने कहा कि इस बात का सम्बन्ध तो ग्रेंडल की ज़िन्दगी के समय की रफ्तार धीमी करने से है और शायद असम्भव है।" कुछ पल रुकने के बाद उन्होंने बात जारी रखी। "तो मैंने कई चीज़ें आज़माईं और प्रयोग किए।"

"ग्रेंडल पर?" सिरिल ने पूछा।

"ऊँऽऽ हाँ, ग्रेंडल के लिए समय की रफ्तार कम करने के लिए, ताकि वह भी स्थिरता के उस पल को अनुभव कर सके, यानी ऐसा पल जब वह पूरी तरह थम जाए जबकि दुनिया घूमती रहे।"

"और फिर क्या हुआ?" बन्दरियाजी ने पूछा।

"हुआ सिर्फ यह कि मैंने ग्रेंडल को हमेशा-हमेशा के लिए नन्हा बना लिया, मगर गलत तरीके से," मदाम ग ने दुख में डूबी हुई आवाज़ में जवाब





दिया। "देखो, वह कभी बड़ा नहीं होता, उसकी उम्र नहीं बढ़ती। जैसे ही वह सोता है वह सब कुछ भूल जाता है। मेरे प्रयोगों ने उसे बदल डाला है। वह जब भी जागता है, उसे नए सिरे से शुरुआत करनी होती है। सब कुछ ताज़ा होता है। सब कुछ नया। पहले उसने जो कुछ भी सीखा था वह उसे याद नहीं रहता।"

सुन्दरी ग्रेंडल को तकने लगी। "बेचारा," उसने सोचा। "तभी तो उसे सोना अच्छा नहीं लगता और वह रात भर भटकता फिरता है।" अब उसे समझ आ गया कि ग्रेंडल उसे पहचान क्यों नहीं रहा था। उसने यह बात जाँचने का फैसला किया।

"ग्रेंडल," उसने कहा, "क्या तुम्हें याद है कि रात को तुमने मुझे जगाया था और कहा था कि तुम दानव हो?"

ग्रेंडल ने हैरत से सुन्दरी को देखा। "मुझे नहीं लगता कि हम पहले मिले हैं," उसने कहा। लगा वह सच कह रहा था। "और जहाँ तक दानव होने की बात है, मुझे नहीं पता कि ऐसा मैं क्यों कहूँगा। मुझे तो ऐसा कुछ याद नहीं आता।"

सुन्दरी ने ग्रेंडल को तीखी नज़रों से देखा। "असल में, हम मिले थे, और तुमने मुझसे कहा था कि तुम दानव हो। तुमने यह भी कहा था कि जो पहले कभी किसी हथिनी से न मिला हो वह मुझे देखकर डरेगा।"

"मैंने ऐसा कहा था?" ग्रेंडल ने लाचारी से पूछा।

"क्या तुम्हें कुछ भी याद नहीं?" सुन्दरी ने जानना चाहा।

"याद रखने को है ही क्या?" ग्रेंडल ने पूछा। "लहरें और मौसम हमेशा एक से होते हैं और हमेशा बदलते रहते हैं। मैं यहाँ रहता हूँ और मेरी माँ भी। याद रखने को और क्या है?"

"पर अगर हम कल मिलें तो क्या तुम्हें याद रहेगा कि हमने यह बातचीत की थी?" सुन्दरी ने पीछा न छोड़ा।



"मुझे पता नहीं," ग्रेंडल बुदबुदाया। सुन्दरी से उसे परेशानी होने लगी थी। उसके दिमाग के एक कोने में एक नन्हीं हथिनी का आकार था जो कह रहा था कि वह किसी हथिनी से पहले मिल चुका है। उसका माथा दुखने लगा था। उसने सुन्दरी को देख सिर हिलाया मानो कह रहा हो कि वह न जाने क्या-क्या बके जा रही है और समुद्र में छलाँग लगा दी।

मदाम ग्रेंडल ने उनकी ओर देखा। "यही होता है," उन्होंने भारी मन से कहा।

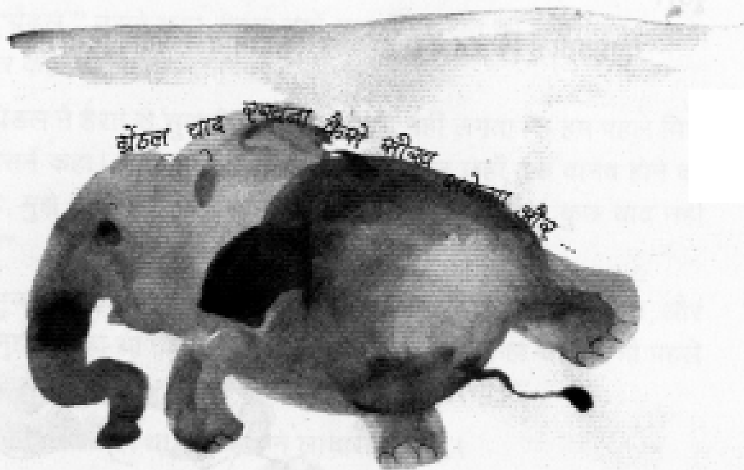
"क्या आप चाहती हैं कि उसकी उम्र बढ़े?" बन्दरियाजी ने हौले-से पूछा।

"मैं चाहती हूँ कि वह बड़ा हो जाए," मदाम ग ने जवाब दिया।



6

ग्रेंडल की इच्छा होनी चाहिए



वे नाश्ता करने बैठे और मदाम ग ने अच्छी मेज़बान बनने की कोशिश की, पर यह ज़ाहिर था कि वे ग्रेंडल को लेकर बहुत चिन्तित हैं।

"क्या ग्रेंडल को ठीक करने का कोई उपाय नहीं है?" बन्दरियाजी ने पूछा, "ताकि उसने जो सीख लिया है वह उसे याद रहे और वह आम बच्चों की तरह दिन-ब-दिन बढ़े?"

मदाम ग ने लाचारी से सिर हिलाया। उनकी रुपहली आँखें गहरे सलेटी रंग में ढल चुकी थीं और उनकी चमड़ी अब सुनहली हो गई थी। "मै सब कुछ आज़मा चुकी हूँ," उन्होंने कहा।

"हमें द्वीप-संन्यासिन से पूछना चाहिए," गोल्डी ने सुझाया। "मैं वापस लौटकर उनसे मदद माँग सकता हूँ।"

"उसमें बहुत समय लगेगा," सुन्दरी ने बात काटी। वह ग्रेंडल के बारे में सोच रही थी और उसकी मदद करना चाहती थी। "मुझे पता चल गया। मैं समुद्र में कूदूँगी और समुद्री संन्यासिन को एक दूरानुभूति सन्देश भेजूँगी।"

इससे पहले कि सुन्दरी को कोई रोक पाता, उसने छपाक से समुद्र में छलाँग लगाई। समुद्र ठण्डा था और बेचारी सुन्दरी काँपने लगी। वह तेज़ से तेज़ तैरना चाहती थी ताकि गरमाहट पैदा हो, पर फिर भी समुद्री संन्यासिन को यह दूरानुभूति सन्देश भेजने तक वह स्थिर रही : **ग्रेंडल याद रखना कैसे सीख सकता है और वह बड़ा होना कैसे शुरू होगा?**

फिर गर्मी पाने के लिए वह ताबड़तोड़ पैर चलाने लगी। ओपल और गोल्डी ने उसे चट्टानों पर चढ़ने में मदद की। "तुम खुद को सुखाओ," उन्होंने कहा। "हम जवाबी सन्देश सुन लेंगे।" वे खुद पानी में उतर गए।

जब सुन्दरी खुद को सुखाने के लिए शरीर को झकझोर रही थी और धम्मक-धम्मक पैर पटक रही थी, ओपल और गोल्डी ने समुद्री संन्यासिन का लहरों के सहारे भेजा गया जवाब सुना। जवाब बिलकुल सीधा था: **ग्रेंडल की इच्छा होनी चाहिए।**

अदिति और बन्दरियाजी मदाम ग को घूरने लगीं।

"क्या ग्रेंडल बड़ा नहीं होना चाहता?" अदिति ने मदाम ग से कुछ हैरत से पूछा।

"नहीं, मुझे ऐसी इच्छा क्यों होनी चाहिए?" ग्रेंडल ने जवाब दिया।



वह चुपचाप लौट आया था और एक चट्टान पर बैठा उन्हें देख मुस्कुरा रहा था।

"क्योंकि....," अदिति रुक गई। ग्रेंडल के रवैये ने उसे इतना चौंका दिया था कि उसे कुछ देर सूझा ही नहीं कि वह क्या कहे। "तुम उम्र और आकार में बड़े और ताकतवर हो जाओगे," उसने ग्रेंडल से कहा।

"मैं तो पहले ही काफी बड़ा और ताकतवर हूँ," ग्रेंडल ने जवाब दिया। "और जहाँ तक उम्र बढ़ने का सवाल है, मुझे नहीं लगता कि यह कोई खास अच्छी चीज़ है। मुझे पूरा समय अपनी माँ की तरह फ़िक्र करने में बिताना पड़ेगा या बन्दरियाजी की तरह जोड़ों में दर्द से परेशान होना पड़ेगा।"

"बड़ा होना सिर्फ दुख-तकलीफ का मामला नहीं," बन्दरियाजी ने उसे धीरज से समझाया। "यह ज़िम्मेदारी का भी मामला है।"

"यही तो बात है!" ग्रेंडल बोल उठा। "मैं किसी भी चीज़ के लिए ज़िम्मेदार नहीं बनना चाहता। चूँकि मुझे आज का किया कल याद नहीं रहता इसलिए मैं जो भी करूँ उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे कोई किसी भी बात के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकता!"

"यह तो बड़ी गैर-ज़िम्मेदार आदत है," बन्दरियाजी ने उसे डाँटा।

"जी हाँ," ग्रेंडल ने खुशी से कबूल किया।

"क्या तुम्हें कुछ फर्क नहीं पड़ता कि तुम कौन हो और क्या करते हो?" अदिति ने दलील दी।

"मैं ग्रेंडल हूँ," उसने जवाब दिया, "और मैं सारा दिन खेलता-कूदता हूँ और अपनी माँ के साथ समुद्रतल में रहता हूँ।"

वह बेहद खुश दिखाई दे रहा था। उसकी हरी चमड़ी सूरज के प्रकाश में चमक रही थी। उसके हरे घुँघराले बाल कानों को घेरे हुए थे, और सच तो यह था कि वह पूरी तरह स्वस्थ और खुश दिखाई दे रहा था।

सिरिल और सुन्दरी यह बातचीत चुपचाप सुन रहे थे। वे समझ गए थे



कि ग्रेंडल से इस तरह समझदारी भरी बातें करने से काम नहीं चलेगा। दोनों ड्रैगन भी इसी निष्कर्ष पर पहुँचे थे। ओपल सुन्दरी के पास सरकी और उसके कानों में फुसफुसाकर बोली, "मेरी एक योजना है। तुम मेरा साथ देना।"

उसने अपना गला साफ किया और ज़ोर से गोल्डी से बोली, "चलो हम लेप धो डालते हैं और अपने असली आकार में आ जाते हैं ताकि जाँबाज़ साथी घर लौटने से पहले यहाँ घूम लें।"

ड्रैगनों ने 'छोटा करो' लेप धो डाला और जल्द ही अपने सामान्य आकार में लौट आए। अदिति की मदद से सुन्दरी ने गोल्डी की पीठ पर अपना हौदा बाँधा और सिरिल को साथ ले हौदे पर चढ़ गई। उसने मदाम ग को भी साथ चलने का निमंत्रण दिया।

"हवा में ऊपर उठकर," उसने कहा, "हम वहाँ महाद्वीप पर जा सकते हैं।"

"क्यों नहीं?" हौदे में शान से कदम रखते हुए मदाम ग ने कहा। "वहाँ फ्रांस है। हम फ्रांस के तट पर दिन का खाना खा सकते हैं।"

अदिति और बन्दरियाजी को अन्दाज़ा लग गया था कि ड्रैगनों की कोई योजना है। वे भी उसमें शामिल होकर ओपल की पीठ पर चढ़ गए।

अब सिर्फ ग्रेंडल बच गया। "मेरा क्या होगा?" वह ज़ोर से बोला। "मैं गोल्डी की पीठ पर चढ़ूँ या ओपल की?"

"किसी पर नहीं," ओपल ने जवाब दिया। "हम हर किसी को अपनी पीठ पर सवारी नहीं करने देते। ड्रैगन की सवारी बड़ी खास होती है। तुम पर तो यह बेकार जाएगी।"

"नहीं, बेकार नहीं जाएगी," ग्रेंडल चीखा। "मुझे बड़ा मज़ा आएगा।"

"हाँ, पर कल तक तुम सब कुछ भूल गए होगे," गोल्डी ने उस नाटक में शामिल होते हुए कहा। "कल तुम्हें यह भी याद नहीं रहेगा कि ड्रैगन क्या होता है या कि तुम एक नहीं बल्कि दो-दो ड्रैगनों से मिले थे।"

"मुझे याद रहेगा," ग्रेंडल रुआँसा होकर बोला। "मुझे पक्का यकीन है कि मुझे याद रहेगा। ठीक है, मैं याद रखने की कोशिश करूँगा।" वह उनके साथ जाने को बेताब था, पर बहुत देर हो चुकी थी। गोल्डी और ओपल पहले ही उड़ चुके थे।

"कब लौटोगे?" ग्रेंडल ज़मीन से चीखा।

"दो-तीन घण्टों में," सुन्दरी ने चिल्लाकर जवाब दिया। ग्रेंडल बड़ी मुश्किल से जवाब सुन पाया। वह उनका इन्तज़ार करने बैठ गया। यह उसे अच्छा नहीं लगा कि उसकी माँ उसके दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करने जाए और वह यहीं रुका रहे। लौटने पर वह उन्हें ज़रूर खरी-खोटी सुनाएगा।

इधर चारों जाँबाज़ साथी, मदाम ग और दोनों ड्रैगन आकाश में ऊपर उठे और फ्रांस की ओर उड़ चले। वे ब्रिटैनी के पास एक सँकरी खाड़ी में उतरे। अदिति पास के गाँव से खाने-पीने का कुछ सामान ले आई और उन्होंने उसे खाया। उन्होंने ग्रेंडल के बारे में बात की।

"उसके साथ बहस का कोई फायदा नहीं है," सिरिल ने कहा। "ओपल ठीक कहती है। हमें कोशिश करनी होगी कि उसके मन में बड़ा होने और बातें याद रखने की इच्छा जगे।"

"कैसे?" मदाम ग ने पूछा। इतने सालों बाद पहली बार उन्हें लगा कि शायद कोई इलाज हो सकता है।"

"आप देखेंगी," सुन्दरी ने विश्वासपूर्वक कहा। "अगर मेरे दोस्त कुछ करने की ठान लें, तो आपको भी पता चलेगा कि ये बड़े चतुर हैं।"

7

आइसक्रीम की बालटियाँ

वे लौटे तो ग्रेंडल का मिज़ाज बहुत खराब था।

वह फौरन शिकायत करने लगा। "यह तो ठीकनहीं है कि मेरी माँ मेरे दोस्तों के साथ जाए और मज़े करे और मैं घर पर ही बैठा रहूँ।"

"एक मिनट," सुन्दरी ने उसे टोका। "तुम कौन हो? और हमें अपना दोस्त क्यों कह रहे हो?"

ग्रेंडल भौचक्का होकर सुन्दरी को देखने लगा। "पर तुम तो तीन घण्टे पहले मुझसे गपशप कर रही थीं। क्या तुम्हें याद नहीं? मैं ग्रेंडल हूँ।"

"ओह हाँ, ग्रेंडल," सुन्दरी ने सिर खुजलाया। "वैसे तो मैं हथिनी हूँ और कहते हैं कि हथिनियों की याददाश्त अच्छी होती है, पर मेरी काफी कमज़ोर है। तो तुम कहते हो कि तुम मेरे दोस्त हो? ठीक है, हो सकता है। पर सचमुच, मुझे तुम्हारी याद नहीं।"

ग्रेंडल को सुन्दरी के व्यवहार से इतना धक्का पहुँचा कि उसे सूझा नहीं कि वह क्या जवाब दे। वह अदिति की ओर मुड़ा, इस उम्मीद से कि कम से कम वह कुछ समझदारी दिखाएगी। उसे यह नहीं पता था कि अदिति के स्वभाव में शरारत भी थी।

"तुम्हें तो मेरी याद होगी?" उसने अदिति से चिरौरी की।



"ओह हाँ," उसने जवाब दिया। "खूब अच्छी तरह से याद है। तुम्हीं तो वह गन्दे लड़के हो जिसने कल हमारे बिस्तर खराब कर दिए थे।"

"कतई नहीं!" ग्रेंडल गुस्से से चीखा।

"तुम्हें कैसे पता?" अदिति ने मीठी आवाज़ में जवाब दिया। "मैं तो सोच रही थी कि तुम्हारे लिए हर दिन एक नया दिन होता है।"

"और मुझे भी तुम याद हो," ओपल ने जोड़ा। "तुम वही बदमाश छोकरे हो जिसने मुझ पर सवारी करने के लिए मुझे खूब सताया और जब मैं तुम्हें सवारी करवाने लगी तो तुम चीखे-चिल्लाए कि तुम्हें उलटी आ रही है और नीचे उतरना है।"

"यह सच नहीं है!" ग्रेंडल ने विरोध किया। "मैं तुम्हें नहीं सताता। और



अगर तुमने मुझे सवारी कराई होती तो मैं चीखता-चिल्लाता भी नहीं। मैं खुश हुआ होता।"

"पर तुम्हें कैसे पता कि तुमने क्या किया था?" ओपल ने प्यार से पूछा।

"और तुम्हीं तो वह लड़के हो जिसने मुझे और मेरी माचिस की डिबिया को लहरों में फेंक दिया था," सिरिल ने खेल में शरीक होते हुए कहा। "मैं तो डूब ही जाता, सौभाग्य से बन्दरियाजी ने मुझे बचा लिया, बावजूद इसके कि उनके बाल गीले हो गए और उनका गठिया और उभर आया।"

"बिलाशक, मैंने ऐसा नहीं किया होगा," ग्रेंडल ने धीमी आवाज़ में कहा। अपने कारनामों का बखान सुन वह इतना घबरा गया कि उसे सूझ नहीं रहा था कि वह क्या सोचे।

मदाम ग को अपने बेटे पर तरस आने लगा था। वह बातचीत में दखल देकर उसे तसल्ली देना चाहती थीं, पर बन्दरियाजी ने उन्हें रोक दिया।

"उसे सीखना होगा," उन्होंने नरमी से कहा।

गोल्डी आगे बढ़ा। "और मुझे भी तुम याद हो," वह गुर्राते हुए ग्रेंडल से बोला, "तुम वही छोटे लड़के हो जिसने यह देखने के लिए मुझे आग लगा दी थी कि ड्रैगन जलते हैं या नहीं।"

अब तक ग्रेंडल की सारी हवा निकल चुकी थी। "प्लीज़," उसने कहा, "अगर मैंने वे सब बुरे काम किए जो आप कह रहे हैं तो मैं सच में शर्मिन्दा हूँ। क्या मैं कुछ करके इसकी भरपाई कर सकता हूँ?"

अदिति और उसके साथियों ने एक-दूसरे को देखा। "ठीक है," अदिति बोली, "अगर तुम सच में शर्मिन्दा हो तो तुम्हें कुछ ऐसा करना होगा जो सचमुच मुश्किल है।"

"खुशी से करूँगा!" ग्रेंडल ने कहा। "आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं? क्या समुद्र में कूदकर उसके तल से तुम्हारे लिए दुर्लभ सीपियाँ ले आऊँ?"



"ना, ऐसा कुछ नहीं," सुन्दरी ने कहा। "तुम्हें हमारे नाम याद रखने हैं और कल सुबह हमें सुनाने हैं।"

"यह तो आसान है!" ग्रेंडल ने चीखकर कहा, पर फिर वह अचानक रुक गया। उसे एहसास हुआ कि यह उसके लिए, ज़रा भी आसान नहीं है।

"मैं कोशिश करूँगा," उसने गम्भीरता से कहा। "प्लीज़? क्या आप अब दोपहर का बाकी समय मेरे साथ बिताएँगे?"

"हाँ, हममें से कुछ ज़रूर साथ रहेंगे," अदिति ने उसकी बात मानी। "हम गाँव देखना चाहते हैं। तुम हमारे साथ चलोगे?"

"खुशी से," ग्रेंडल ने जवाब दिया। "पर अच्छा होगा कि हम अदृश्य करने वाला चोगा पहन लें। गाँव में हथिनी सबका ध्यान खींचेगी।"

"तो चोगा पहन मेरी पीठ पर बैठ जाओ। ध्यान रखना कि चोगा मुझे भी ढँक ले। मैं तुम्हें सवारी कराती हूँ," सुन्दरी ने न्यौता दिया।

और इस तरह वे चल पड़े: ग्रेंडल और अदिति सुन्दरी की पीठ पर बैठे, सिरिल अदिति के कन्धे पर। मदाम ग और बन्दरियाजी वहीं रुके रहे जहाँ वे थे। वे गपशप करना चाहते थे। और ओपल व गोल्डी आकाश में उड़ गए।

जब वे गाँव से नीचे तट की ओर बढ़ रहे थे तो सुन्दरी ने जो पहली चीज़ देखी वह आइसक्रीम बेचने वाली एक औरत थी।

"मुझे आइसक्रीम बहुत पसन्द है," सुन्दरी ने ग्रेंडल को बताया। "क्या किसी तरह हमें भी वह मिल सकती है?"

"मेरी जेब में थोड़े-से पैसे हैं," उसने सुन्दरी से कहा। "मुझे लगता है कि शायद हम आइसक्रीम का एक कोन खरीद सकते हैं।"

उसने अदिति को पैसे दिए, अदिति ने चोगा उतारा, नीचे उतरी और कोन खरीदने गई। उस औरत के पास दर्जनों तरह की आइसक्रीम थी: रम और किशमिश, नींबू अण्डा, पिस्ता, कॉफी क्रीम, मलाईदार क्रीम....। अदिति पिस्ते और मलाईदार के बीच तय ही नहीं कर सकी, पर उसे याद आया कि



उसने कहीं पढ़ा था कि डेवन की मलाईदार क्रीम प्रसिद्ध है, सो उसने वही चुनी।

उन्होंने सिरिल को एक बूँद आइसक्रीम दी और उसने कहा उसके लिए यह काफी है। फिर ग्रेंडल और अदिति दोनों बोले कि उन्हें आइसक्रीम खास पसन्द नहीं है और कोन सुन्दरी की ओर बढ़ाया। वे सिर्फ शिष्टाचार बरत रहे थे क्योंकि उन्हें पता था कि सुन्दरी के तो यह दाढ़ में भी नहीं लगेगी। सुन्दरी समझ गई। उसने कहा, "शुक्रिया," और वह सिर्फ थोड़ा-सा चाटना चाहती थी, लेकिन इससे पहले कि वह जान पाती कि क्या हुआ है, वह पूरा कोन गड़प चुकी थी।

"मैं सच में बहुत शर्मिन्दा हूँ," उसने कहा। "मैं ऐसा नहीं करना चाहती थी।" फिर उसने उसाँस छोड़ी। "बहुत लज़ीज़ थी। हमें थोड़े और पैसे जुटाने का तरीका सोचना चाहिए ताकि सबके लिए काफी आइसक्रीम खरीदी जा सके।"

"गुफा में मेरे पास कुछ पैसे रखे हैं," अदिति ने सुन्दरी से कहा। "क्या वापस लौट चलें?"

"नहीं, नहीं, कुछ सोचते हैं," सुन्दरी बुदबुदाई। वह कंकड़ीले तट को देखने लगी। कुछ बच्चे पानी में पैर डाले बैठे थे हालाँकि उनके माँ-बाप उनसे कहे जा रहे थे कि पानी बहुत ठण्डा है। कुछ बच्चों के पास फावड़े और बालटियाँ थीं, पर वे कंकड़ों से किले नहीं बना पा रहे थे। उस दिन हवा चल रही थी और एक-दो बच्चे पतंग उड़ा रहे थे। सुन्दरी कुछ देर खड़ी पैसे कमाने की जुगत सोच रही थी कि अचानक हवा के तेज़ झोंके ने चोगे के कोने को उठाया और उसे उड़ा दिया। इससे पहले कि वह पानी में गिरे ग्रेंडल उसे पकड़ने दौड़ा; पर इस बीच बच्चों ने सुन्दरी को देख लिया था।

वे उसके पास दौड़े आए और घूर-घूरकर देखने लगे।

"कितनी सुन्दर है!" एक नन्ही-सी लड़की अचरज से फुसफुसाई। वह



अपनी माँ की ओर मुड़ी और बोली, "प्लीज़ माँ, क्या मैं सवारी कर सकती हूँ?"

बच्ची की माँ अदिति की ओर मुड़ी। "प्लीज़, क्या मेरी नन्ही बिटिया सवारी कर सकती है?"

अदिति ने सुन्दरी को देखा जिसने हामी में सिर हिलाया।

"हाँ, ठीक है। पर सिर्फ उन चट्टानों तक और फिर वापस। इधर मेरे पास आओ और सुन्दरी हम दोनों को सूँड़ से उठा लेगी," अदिति ने बच्ची से कहा।

"ओह शुक्रिया!" नन्ही लड़की बोली और उसकी माँ ने अदिति की हथेली में एक पाउण्ड का सिक्का धर दिया।

"धन्यवाद," अदिति ने कहा।

इस बीच चार और बच्चे एक-एक पाउण्ड का सिक्का थामे आ खड़े हुए और सवार होने का इन्तज़ार करने लगे। सुन्दरी ने उन्हें भी ऊपर चढ़ा लिया।

जल्दी ही एक कतार बन गई। ग्रेंडल ने पैसे इकट्ठे किए, अदिति बच्चों को हथिनी पर चढ़ाने लगी और सिरिल ने हिसाब रखा। बच्चे सुन्दरी की तारीफ करने में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने ग्रेंडल के मीनपक्षों और उसके झिल्लीदार पैरों पर ध्यान नहीं दिया।

सुन्दरी ने तट पर बीस बार चक्कर लगाए। उसने ध्यान रखा कि उसके रुकने से पहले हरेक बच्चा कम से कम एक बार सवारी ज़रूर कर ले।

"क्या तुम थक गईं?" अदिति ने पूछा।

"कुछ खास नहीं," सुन्दरी ने जवाब दिया। "हमने कितने पैसे कमा लिए?"

"एक सौ पाउण्ड," सिरिल ने हिसाब बताया।



"तो उससे हम कितनी आइसक्रीम खरीद सकते हैं?"

"मुझे लगता है ढेर सारी," ग्रेंडल ने कहा। "चलो पता करते हैं।"

एक सौ पाउण्ड से सच में ढेर सारी आइसक्रीम खरीदी जा सकती थी। उन्होंने आइसक्रीम बेचने वाली महिला की सारी आइसक्रीम खरीद ली। आखिर, उन्होंने सोचा, गोल्डी और ओपल को ढेर सारी आइसक्रीम चाहिए होगी।

आइसक्रीम से लदे-फदे वे गुफा की ओर लौटे। रास्ते में सुन्दरी ने ग्रेंडल को बड़बड़ाते सुना। सुनने के लिए उसने अपने विशाल कान फैलाए। वह एक छोटा-सा गीत दोहरा रहा था।

ओपल गोल्डी हो गए दो
सिरिल बन्दरियाजी चार
अदिति सुन्दरी को भूल न जाऊँ
वरना मेरे साथ न खेलें
फिर वो अगली बार

अचानक उसे ग्रेंडल के लिए दुख हुआ। वह इस उम्मीद से उनके नाम याद करने की कोशिश कर रहा था कि कल तक वह उन्हें भूल न जाए।

8

मेरी गुलाब?

अगली सुबह ग्रेंडल धड़धड़ाता हुआ सीधे हथिनी के पास पहुँचा।

"तुम सुन्दरी हो," उसने कहा।

"हाँ, मुझे पता है," उसने जवाब दिया।

"नहीं, मेरा मतलब है तुम्हारा नाम सुन्दरी है। देखा, मुझे याद रहा!" उसने विजेता जैसी खुशी से भरकर कहा।

"बहुत बढ़िया," सुन्दरी ने उससे कहा। "क्या तुम्हें बाकी सब के नाम भी याद हैं?"

ग्रेंडल भौंहें चढ़ाकर याद करने की कोशिश करने लगा। वह खुद से बुदबुदाया, "ओपल गोल्डी हो गए दो!" वह दोनों ड्रैगनों के पास गया और





उनसे मिला। "सिरिल बन्दरियाजी चार।" उसने सिरिल और एक आँख वाली बन्दरिया को भी हैलो कहा। "अदिति और सुन्दरी को भूलूँ, तो मैं गया काम से!" उसने अदिति से हैलो कहा और सुन्दरी को गले लगाया।

"मुझे याद रहा! मुझे याद रहा!" वह चिल्लाया।

"पर कल तुम्हारी कविता के आखिरी शब्द अलग थे," सुन्दरी ने ध्यान दिलाया।

"हाँ, मुझे पता है। मुझे वह भी याद था," ग्रेंडल ने खुशी-खुशी जवाब दिया। "मैंने अभी-अभी बदल दिए।"

उन्होंने तट के पास गुलाब बाग में घूमते हुए सुबह गुज़ारी। सुन्दरी शाहबलूत के एक बड़े पेड़ के नीचे इस डर से चुपचाप बैठी रही कि कहीं उसके पैरों तले क्यारियाँ न कुचली जाएँ या झाड़ियों को नुकसान न पहुँचे; पर ग्रेंडल उसके पास आ बैठा और साथ रहा।

"प्लीज़," उसने सुन्दरी से कहा, "क्या तुम याद रखने में मेरी मदद करोगी? क्या तुम याद रखने में माहिर हो?"

"हथिनियों की याददाश्त बहुत अच्छी होती है," सुन्दरी ने उससे कहा।

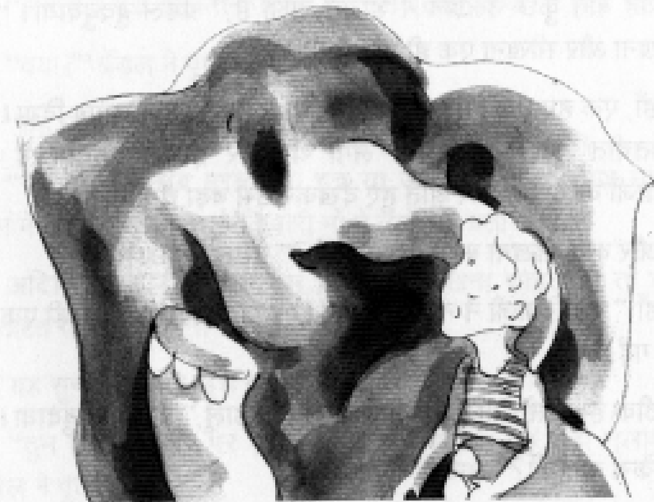
"तो फिर कल तुमने ऐसा क्यों जताया था जैसे तुम्हें याद नहीं कि मैं कौन हूँ?" ग्रेंडल ने पूछा।

"ओह! तो तुम्हें वह भी याद है? मैंने ऐसा इसलिए जताया था ताकि तुम्हें पता चले कि याद नहीं रखने पर दूसरों को कैसा लगता है।"

"मुझे लगता है कि शायद मुझे वह याद रहता है जो मैं याद रखना चाहता हूँ," ग्रेंडल ने कुछ अनिश्चय के साथ कहा। "आखिर, मैं अपने दोस्तों के नाम थोड़े ही भूलना चाहता हूँ। तुम सब मेरे दोस्त हो, हो ना?"

"हम धीमे-धीमे दोस्त बन रहे हैं," सुन्दरी ने कहा। "चलो, मैं तुम्हें याद करवाने में मदद करती हूँ।"





ग्रेंडल झिझका। "मुझे जो अच्छा लगे उसे याद रख मैं बाकी सब भूल क्यों नहीं सकता?"

"नहीं," सुन्दरी ने दृढ़ता से कहा। "यह बेईमानी है। तब तुम्हारा नज़रिया भी गड़बड़ा जाएगा, और तुम्हारे दोस्त तुम पर भरोसा नहीं रख सकेंगे।"

"किस तरह का भरोसा?" ग्रेंडल ने जानना चाहा।

"कि तुम हर दिन तुम रहो और उनके दोस्त बने रहो," सुन्दरी ने जवाब दिया।

"हम्म, और मैं चीज़ें याद नहीं रख पाऊँ तो क्या मैं मैं नहीं रहूँगा?"

"अगर तुम्हें यह याद ही न हो कि तुम कल क्या थे तो आज तुम तुम कैसे रह सकते हो?" सुन्दरी ने जवाब दिया।



"यह बात कुछ उलझन में डालने वाली है," ग्रेंडल बुदबुदाया। "क्या याद रखना और सीखना एक ही बात है?"

"हाँ, एक हद तक। मुझे तो यही लगता है," सुन्दरी ने जवाब दिया। उसे यह बातचीत कुछ भारी लगने लगी थी और इसलिए मदाम ग और बन्दरियाजी को अपनी ओर आते हुए देखकर उसे बड़ा चैन मिला।

"और क्या सीखना बढ़ने के समान है?" ग्रेंडल ने पूछा।

"हाँ," बन्दरियाजी ने नरमी से कहा। वह और मदाम ग पास ही एक बेंच पर बैठ गईं।

"ठीक है, मैं सोचता हूँ कि कोशिश कर ही डालूँ," ग्रेंडल बुदबुदाया।

"किस बात की?" सुन्दरी ने पूछा।

"बड़े होने की," ग्रेंडल ने कहा।

"और बूढ़ा होने के बारे में क्या कहना है?" सुन्दरी ने बन्दरियाजी और मदाम ग की ओर मुड़ते हुए पूछा।

"ओह! उसका...." बन्दरियाजी ने मदाम ग के पास एक बेंच पर आराम से बैठते हुए कहा, "उसका तो कोई इलाज नहीं है।"

"क्या आप यह कह रही हैं," ग्रेंडल ने परेशान होकर पूछा, "कि बड़ा होना अच्छा है, पर बूढ़ा होना अच्छा नहीं है?"

"मेरा खयाल है कि हम कह रहे हैं," मदाम ग ने उसे कहा, "कि बड़ा होना और जो सीख सकें उसे सीखना अच्छा है, और जहाँ तक हो सके अपने स्वास्थ्य का खयाल रखना भी अच्छा है।"

ग्रेंडल और सवाल पूछता, उससे पहले अदिति उनके पास आ गई। वह एक-एक कर गुलाब की सारी झाड़ियों को जाँच चुकी थी और बागबानों से बात भी कर चुकी थी।



"लगता है मुझे वह मिल गया है," उसने ऐलान किया।

"क्या?" ग्रेंडल ने पूछा।

"वह गुलाब," अदिति ने उत्तर दिया।

"पर गहरा गुलाब मुरब्बा या इत्र या उस जैसी कोई चीज़ नहीं है," ग्रेंडल ने कहा। "मुझे याद है कि मेरी माँ ने तुम्हें यह बताया था।"

अदिति हँस पड़ी। "अब तुम चीज़ें याद रखना चाहते हो तो तुम्हारी याददाश्त भी बढ़िया होती जा रही है।"

यह सुनकर ग्रेंडल खुश हुआ।

"तुम निश्चित तौर पर कैसे कह सकती हो कि यह सही गुलाब है?" सिरिल ने पूछा।

"किसी भी गुलाब की झाड़ी पर अब तक फूल ही नहीं खिले हैं," सुन्दरी ने ध्यान दिलाया।

"पक्के तौर पर तो मैं नहीं कह सकती," अदिति ने बात स्वीकार की। "पर बागबान ने बताया कि मई महीने में—मई के अन्त में—जो अकेला गुलाब फूलने लगता है वह है *मेरी गुलाब*। और तुम्हें याद होगा कि नानीमाँ ने कहा था कि वे कई साल पहले मई के महीने में यहाँ आई थीं।"

मदाम ग को शक था, "पर तुम्हारी नानी तो तकरीबन पचास साल पहले आई थीं और *मेरी गुलाब* तो एक नई किस्म है। इसका नाम हेनरी अष्टम के जहाज़ के नाम पर रखा गया था जब उस डूबे हुए जहाज़ को पानी से निकाला गया था, और यह सिर्फ पच्चीस बरस पहले की बात है।"

"ओह," अदिति का चेहरा उतर गया।



"पर मुझे लगता है कि फिर भी तुम्हारी नानी को यह पसन्द आएगा," मदाम ग ने कोमल स्वर में कहा। "क्यों न हम पौधशाला में जाकर उनके लिए एक खरीद लें।"

इस बात ने अदिति को काफी खुश कर दिया। यह भी तय हो गया कि वे उसी दोपहर यह काम करेंगे।

दोपहर के भोजन के दौरान उन्होंने योजनाओं पर बात की। सुन्दरी ने कहा कि वह भी जाना चाहती है। अब क्योंकि इस बात से फर्क नहीं पड़ता था कि जो गुलाब उन्हें मिला था वह सही गुलाब है या नहीं, इसलिए उसने भी एक खूबसूरत दक्षिणी गुलाब देखा था जो वह अदिति की नानी के लिए ले जाना चाहती थी। उसने कहा कि वह खूब सावधानी बरतेगी और किसी भी चीज़ या व्यक्ति को परेशानी नहीं होने देगी।

"हाँ, और अगर हम गुलाब के पौधों को सावधानी से लपेट लें तो हम उन्हें आज शाम लौटते समय सही-सलामत ले भी जा सकेंगे," बन्दरियाजी ने जोड़ा।

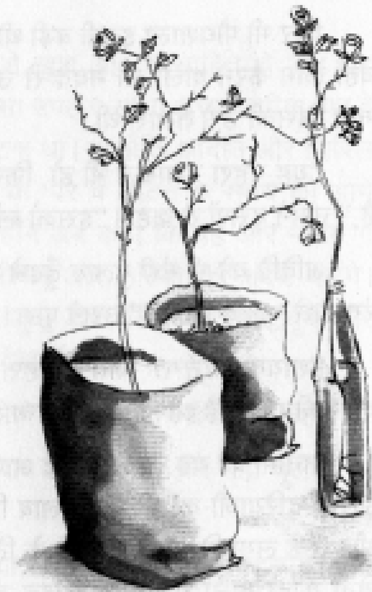
इस पर ग्रेंडल परेशान हो गया। "क्या?" वह चीखा। "तुम लोग आज ही जा रहे हो? मैंने तो सोचा था कि तुम लोग हफ्तों, शायद महीनों, सालों तक यहीं रहोगे। कम से कम पूरी गर्मियों में?"

यह साफ था कि वह अपनी रुलाई रोक रहा था। सुन्दरी ने अपनी सूँड़ उसके इर्द-गिर्द लपेटी और कुछ समय के लिए ग्रेंडल ने अपना चेहरा उसके शरीर से चिपका लिया। सुन्दरी भी रुलाई रोकने की कोशिश कर रही थी, पर कोशिशों के बावजूद आँसू की एक बड़ी-सी बूँद उसके चेहरे पर बह निकली।

सिरिल ने बन्दरियाजी के कान में कुछ फुसफुसाया, और अदिति भी बन्दरियाजी के पास गई और कुछ बोली, पर बन्दरियाजी ने सिर हिलाया। उन्होंने अदिति की नानी से वादा किया था कि वे जल्दी लौटेंगे। बन्दरियाजी मदाम ग को एक तरफ ले गई और उनसे कुछ बातचीत की; पर कोई भी ज़ोर



से नहीं बोला। दोपहर के भोजन के समय सब चुपचाप थे, लेकिन ग्रेंडल ने खुद को सम्हाला और खुश रहने की कोशिश की। दोनों ड्रैगनों ने कहा कि वे दोपहर को आराम करेंगे और शाम की उड़ान के लिए तैयारी करेंगे। और फिर, खाने के बाद नन्हा ग्रेंडल और मदाम ग चारों जाँबाज़ों के साथ गुलाब के पौधे खरीदने निकले।



9

उपहार

"यह काफी छोटी पौधशाला है," मदाम ग ने चेताया। "उम्मीद है तुम लोगों को जो चाहिए वह मिल सकेगा।"

फिर भी पौधशाला इतनी बड़ी थी कि सुन्दरी उसमें आराम से चल सके। वहाँ काम करने वालों की मदद से उसे गुलाब का वह पौधा जल्दी ही मिल गया जिसकी उसे तलाश थी।

"यह गहरा गुलाब न भी हो, फिर भी इसका रंग सुन्दर गहरे गुलाब का है," उसने दूसरों से कहा। "इसको *ब्लेसिंग्स* नाम दिया गया है।"

अदिति को भी *मेरी गुलाब* ढूँढने में कोई दिक्कत नहीं हुई। "क्या इसका रंग गहरे गुलाब-सा है?" उसने पूछा।

"शायद *ब्लेसिंग्स* जितना गहरा नहीं," बागबान ने उसे बताया। "यह दश्मिकी गुलाब है और इसकी सुगन्ध अद्भुत है।"

नानीमाँ को यह ज़रूर पसन्द आएगा, अदिति ने सोचा। इस बीच सिरिल और बन्दरियाजी को भी ऐसे गुलाब मिल गए थे जो उन्हें बेहद पसन्द आए और उन्हें लगा कि साथ ले जाने के लिए वे बिलकुल सही हैं। बन्दरियाजी ने बिना काँटों वाला गुलाब *ज़ैफराइन ड्रोहिन* चुना। "यही सबसे बढ़िया है," उन्होंने कहा। "उनको काँटे भी नहीं चुभेंगे। और एक बागबान ने बताया था कि कभी-कभी यह मई महीने के आखिर में खिलता है।"

"यह गहरा गुलाब नहीं है," सुन्दरी ने ध्यान दिलाया।

"नहीं," बन्दरियाजी ने सहमति जताई। "पर मुझे लगता है कि इसके बावजूद उन्हें यह पसन्द आएगा।"

इस बीच सिरिल ने एक गुलाब चुना जिसका नाम *पीस* था।

"यह तो गुलाबी भी नहीं है!" ग्रेंडल ने पौधे पर लगे चित्र को देखते हुए एतराज़ जताया।

"खैर, इसमें कुछ गुलाबीपन तो है," सिरिल ने जवाब दिया।

उसने अपनी पसन्द को सही ठहराने की कोशिश की। "इसके पीलेपन की गहराई में आप झाँकें तो मन में असाधारण भाव जगते हैं...." उसकी आवाज़ धीमी होती गई। "मुझे यकीन है कि उन्हें यह पसन्द आएगा," उसने अचानक अधिक विश्वास से कहा।

वे सब अपनी-अपनी खरीददारी से खुश और उत्साहित थे और यह अटकलें लगा रहे थे कि रानी को कौन सा उपहार सबसे अच्छा लगेगा; पर वे दुखी भी थे क्योंकि उसी शाम उन्हें लौटना था। हालाँकि अदिति और सिरिल दोनों ने बन्दरियाजी से अनुरोध किया था, पर वे लौटने के समय को आगे बढ़ाने के लिए तैयार नहीं हुई थीं। उन्होंने अब कहा कि वह और मदाम ग पहले जाकर वापसी की तैयारी में ओपल और गोल्डी की मदद करेंगे। अदिति, सिरिल और सुन्दरी चाहें तो कुछ देर ग्रेंडल के साथ घूमें और समुद्रतट और गाँव को भी आखिरी बार देख लें।

"मुझे तुम्हारी याद आएगी," सुन्दरी ने उदास स्वर में ग्रेंडल से कहा।

"और मुझे तुम्हारी," ग्रेंडल ने जवाब दिया, "अब मैंने नहीं भूलना जो सीख लिया है।"

वे तट के किनारे केकड़ों को लतियाते घूमते रहे। सिरिल ग्रेंडल की पीठ पर सवार था। "मुझे ई-मेल भेजना," उसने ग्रेंडल से कहा। "मैं फटाफट जवाब देता हूँ।"



जब वे गुफा में लौटे तो पाया कि गोल्डी की पीठ पर हौदा बाँधा जा चुका है। दोनों ड्रैगन आराम कर चुके थे और उड़ने को तैयार थे।

"सिरिल, तुम और अदिति, सुन्दरी के साथ हौदे में चढ़ो और गुलाब के पौधों का खयाल रखना। मैं अदृश्य करने वाला चोगा लपेटकर ओपल के साथ आती हूँ," बन्दरियाजी ने कहा।

सबको अचरज हुआ पर उन्होंने इसका कोई विरोध नहीं किया। उन्हें पता था कि बन्दरियाजी जब अपना मन बना चुकी हों तब उनसे बहस करना बेकार था।

सुन्दरी, सिरिल और अदिति ने ग्रेंडल और मदाम ग को जितना हो सके उतनी खुशी से गुडबाय कहा और हौदे पर बैठ गए। गोल्डी उड़ चला और कुछ ही मिनटों में ओपल भी उड़ चली।

दोनों ड्रैगन बिना रुके उड़ते रहे और अगले दिन दोपहर को अदिति के नाना-नानी के बाग में उतरे। वे उनके स्वागत में तैयार खड़े थे।

"ग्रेंडल और मदाम ग ठीक हैं," अदिति ने अपने नाना-नानी को बताया, "और उन्होंने आपको नमस्कार कहलवाया है। हम कुछ और रुकना चाहते थे, पर जिस वक्त लौटने को वादा किया था उसी वक्त पर लौट आए हैं। देखिए, हम आपके लिए गुलाब भी लाए हैं।"

हरेक ने अपना-अपना पौधा दिया।

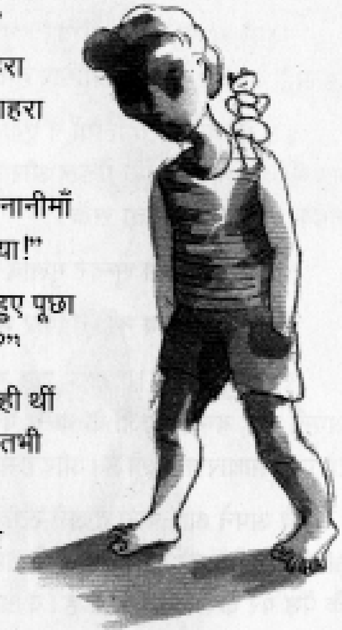
"देखिए, यह मई में फूलता है और इसकी खुशबू बहुत अच्छी है। यह दश्मिकी गुलाब है," अदिति ने *मेरी गुलाब* देते हुए कहा।

"और इसमें काँटे नहीं हैं," बन्दरियाजी ने धीमे से कहा। "इसे *ज़ैफराइन ड्रोहिन* या *अकंटक गुलाब* कहते हैं।"

"और मैंने जो आपके लिए चुना वह *पीस* कहलाता है," सिरिल ने उन्हें कहा। "यह एक संकर टी रोज़ है और हालाँकि यह गुलाबी न होकर पीला है, या गुलाबी की ज़रा-सी आभा लिए हुए है, फिर भी यह सुन्दर है।"



"और मेरे वाला भी एक टी रोज़ है," सुन्दरी ने जोड़ा, "और भले ही यह गहरा गुलाब न हो, फिर भी इसका रंग अद्भुत गहरा गुलाबी है।"



"ये अनोखे उपहार हैं," अदिति की नानीमाँ ज़ोर से बोलीं। "शुक्रिया! तुम सबका शुक्रिया!"

"हम सोच रहे थे," सुन्दरी ने शर्माते हुए पूछा "कि आपको कौन सा सबसे अच्छा लगेगा?"

अदिति की नानी यह जवाब देने जा रही थीं कि उन्हें हरेक का उपहार अच्छा लगा है, तभी गोल्डी बोल पड़ा।

"ठहरिए," उसने कहा, "ओपल और मैं भी आपके लिए उपहार लाए हैं।"

उसका यह कहना था कि मदाम ग और ग्रेंडल ओपल की पीठ से उतरे, अदृश्य करने वाला चोगा हटाया और आगे बढ़ आए। सुन्दरी उनका स्वागत करने दौड़ी और उसने ग्रेंडल को लगभग गिरा ही दिया। सिरिल खुशी से चीख पड़ा, और अदिति ने मदाम ग का हाथ थामा और उन्हें अपनी नानी के पास ले गई। दोनों सहेलियों ने एक-दूसरे को गले लगाया। और अदिति के नानाजी ने ग्रेंडल से हाथ मिलाया और गर्मजोशी से गले लगाया और दोनों का स्वागत किया।

"तुमने हमें बताया क्यों नहीं कि तुम इन्हें भी साथ ला रही हो?" अदिति ने एक आँख वाली बन्दरिया से शिकायती लहज़े में पूछा।

बन्दरियाजी ने मदाम ग को देखकर सिर हिलाया, "मैं मनाने की कोशिश करती रही पर मदाम ग बिलकुल आखिरी समय साथ आने को राज़ी हुई।"

मदाम ग ने माफ़ी माँगी। "मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह कैसा रहेगा," उन्होंने कहा। "आखिर हम इतने बरसों से मिले भी तो नहीं थे।"

इस पर दोनों सहेलियों ने एक-दूसरे को फिर से गले लगाया और फौरन यह भी तय हो गया कि ग्रेंडल और उसकी माँ कई सप्ताह यहीं गुज़ारेंगे ताकि सबके साथ समय बिता सकें।

"ओह, ये सबसे सुन्दर गुलाब हैं," रानी खुशी से बोलीं।

"ये गहरे गुलाब नहीं हैं फिर भी?" बन्दरियाजी बुदबुदाई।

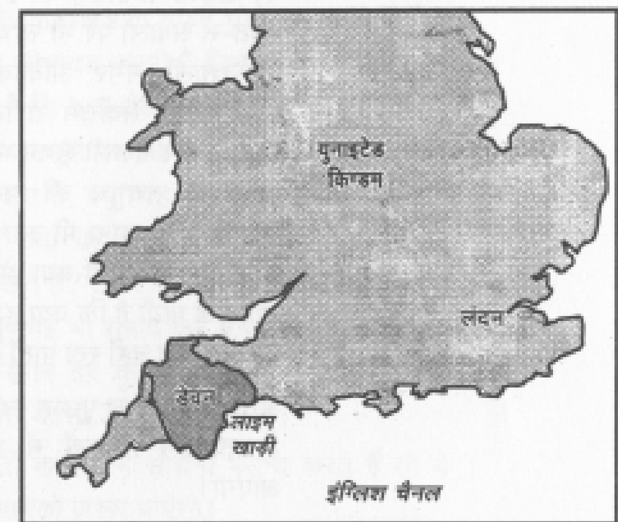
रानी मुस्कुराईं। "नहीं, यह गहरे गुलाब का अनुभव नहीं है।" उन्होंने अपनी बाँह बन्दरियाजी के कन्धे पर रखी। "अपने आसपास दोस्तों का होना तो एक साधारण खुशी है। और इससे मेरा काम अच्छी तरह चल जाएगा।"

वे अपने आसपास देखने लगे। सिरिल ग्रेंडल के कन्धे पर चढ़ गया था, और सुन्दरी उन्हें ले जा रही थी ताकि ग्रेंडल को दिखाया जा सके कि बरगद के पेड़ पर कैसे चढ़ा जाता है। वे आपस में खुश और शान्त नज़र आ रहे थे।

अदिति और उसके दोस्त ड्रैगन पर सवार युनाइटेड किंग्डम की ओर उड़ चले...

आइसलैंड
नॉर्वेजियन सागर
उत्तर अटलांटिक महासागर
आयरलैंड
युनाइटेड किंग्डम
उत्तरी सागर
डेनमार्क
नॉर्वे
स्वीडन
फिनलैंड
रूस
लिथुएनिया
बेलारूस
पोलैंड
जर्मनी
चेक गणतंत्र
यूक्रेन
फ्रांस
स्विटज़रलैंड
ऑस्ट्रिया
हंगरी
क्रोएशिया
काला सागर
इटली
पुर्तगाल
स्पेन
तुर्की
भूमध्य सागर

... डेवन तट के लिए





अदिति की साहस कथाएँ

अद्‌भुत दोस्त

अदिति और एक आँख वाली बन्दरिया
अदिति और टेम्स नदी का ड्रैगन
अदिति और समुद्री संन्यासिन
अदिति और विज्ञानी संन्यासिन

साहसिक कथाओं के पहले सेट में अदिति, बन्दरियाजी, सिरिल चींटा व सुन्दर हथिनी सुन्दर हथि गोल्डी और ओपल नाम के दो ड्रैगनों से दोस्ती करते हैं। वे तीन संन्यासिनों की मदद हासिल करते हैं और बदले में उनकी सहायता भी करते हैं। जो चुनौतियाँ उनके सामने पेश आती हैं उनमें केवल उनकी कुशलता और चतुरता के बल पर शत्रुओं से लड़ने की ही बात नहीं है। उन्हें बहुत-से सवालों पर भी सोचना होता है: अपने से शक्तिशाली मगर अविवेकी किसी जीव से निपटने का सर्वोत्तम तरीका क्या है? किसी असली और नकली ड्रैगन में क्या फर्क होता है? किसी से सचमुच की लड़ाई किए बगैर ही समस्याएँ सुलझाना भी क्या कोई साहसिक कार्य हो सकता है? उन्हें क्या होता होगा, जो यह तो याद रख पाती हैं कि क्या हुआ था मगर घटनाओं का क्रम याद नहीं रख पातीं?

अगर आप सवाल पूछना पसन्द करने वालों में से हैं, तो इन किताबों में आपको ज़रूर मज़ा आएगा।

अनपेक्षित दैत्य

अदिति और उसके दोस्तों ने किया ज्वालामुखी दैत्य का सामना
अदिति और उसके दोस्तों की ग्रेंडल से मुलाकात
अदिति और उसके दोस्तों ने की बुडापेस्ट बहुरूपिया की मदद
अदिति और उसके दोस्त शेमीक की तलाश में

साहसिक कथाओं के इस दूसरे सेट में अदिति और उसके दोस्तों का यूरोप के विविध हिस्सों में मिथकों व किंवदन्तियों के अनेक किरदारों से सामना होता है, जो अनपेक्षित और कभी-कभी तो खतरनाक व्यवहार करते हैं। क्यूमे का सिबिल मददगार बन जाता है। ग्रेंडल दैत्य बस एक बच्चा है; वह हर रोज़ भूल जाता है कि पिछले दिन क्या-कुछ हुआ था। बुडापेस्ट की बहुरूपिया को जैसा समझा जाए वह वैसी हो जाती है। और वाइशेरड के सफेद घोड़े समझदार शेमीक को बन्दरियाजी की मदद करनी है जिन पर कोई ऐसा जादू कर दिया गया है कि झूठ बोले बगैर वह कुछ बोल ही नहीं सकतीं। सवाल उठते हैं: ताकत क्या है? साफ-साफ देखना क्या है? आप क्या हैं, क्या यह इस पर निर्भर है कि आप पहले क्या थे? क्या यह इस पर भी निर्भर है कि दूसरे आपको कैसे देखते हैं? अगर आपको केवल झूठ ही बोलना हो तो क्या आप कोई भी संवाद कर सकते हैं? चार जाँबाज़ दोस्त और दो ड्रैगन हर चुनौती का सामना करते हैं और एक-दूसरे के और बेहतर दोस्त बन जाते हैं।

अगर आप चीज़ों के बारे में सोचना पसन्द करते हैं तो ये साहस कथाएँ आपको ज़रूर भाएँगी।